|| वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ||

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु धार्मिक मासिक पत्रिका

राज्ञि धर्मणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः ।
राजानमनुवर्त्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः ॥

अर्थ : राजाके धर्मात्मा होनेपर प्रजा भी धार्मिक होती है। राजाके पापी होनेपर प्रजा भी पापपरायण होती है और राजाके उदासीन होनेपर प्रजा भी उदासीन होती है; क्योंकि प्रजा राजाका अनुसरण करती है; इसलिए जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा भी हो जाती है।

वर्ष २ / क्रमांक ४
आषाढ, कलियुग वर्ष ५१२२ (६ जून - ५ जुलाई २०२०)
RNI No.- MPHIN/2019/77752

भक्तराज महाराज जन्म शताब्दी वर्ष विशेष

बाबाकी अपने श्रीगुरुसे प्रथम भेंट एवं उनके भजनके माध्यमसे ज्ञानधुनीका जाग्रत होना

प. पू. परमहंस चंद्रशेखरानंदके परम शिष्य प. पू. सद्गुरु अनंतानंद साईश महाराजने नर्मदा तटपर स्थित ग्राम मेहताखेडीमें (बडवाह) कठोर साधनाकर अपने सत्शिष्य श्री. दिनकर केसरकरको (परम पूज्य भक्तराज महाराजको अर्थात बाबा) ९ फरवरी १९५६ को रात दस बजे पालीवाल धर्मशाला, जूना तुकोगंज, इंदौरमें पहली बार दर्शन दिए। इसी वर्ष वसन्त पञ्चमीके दिवस (१६ फरवरी १९५६ के) प्रथम बार अपने श्रीगुरुके स्नान हेतु, सवेरे जलको उष्ण करते हुए प्रथम बार भजन 'बापा माझा हो ज्ञानवन्त' गाया था और उसी क्षणसे उनकी 'ज्ञानधुनी' जाग्रत हो गई।

बाबाद्वारा धर्मकार्य हेतु न्यासकी स्थापना व आश्रमोंका निर्माण

बाबाने श्रीसद्गुरु अनंतानंद साईश शैक्षणिक एवं पारमार्थिक न्यास (ट्रस्ट), इंदौरकी स्थापना समष्टि कार्य हेतु की। इंदौरमें अन्नपूर्णा मार्गपर स्थित भक्तवात्सल्य आश्रमके निर्माण हेतु बाबाने २० अप्रैल १९८२ को भूमि आश्रम निर्माण हेतु क्रय की एवं आज वहां बडा आश्रम है, जहां ऊपरके कक्षमें गुरुमन्दिर है एवं नीचे बाबा व रामजी दादाका (बाबाके उत्तराधिकारी शिष्य-सन्त एवं गुरुबन्धु) स्थान है, जहां आज उन दोनोंके देहत्यागके उपरान्त भी भक्त प्रेमसे वैसे ही सेवा करते हैं, जैसे जब वे दोनों देहमें थे तब सेवा करते थे। भक्तवात्सल्य आश्रममें प्रतिदिन प्रातः व सन्ध्या समय आरती होती है।

गुरु स्तुति एवं देव स्तुति

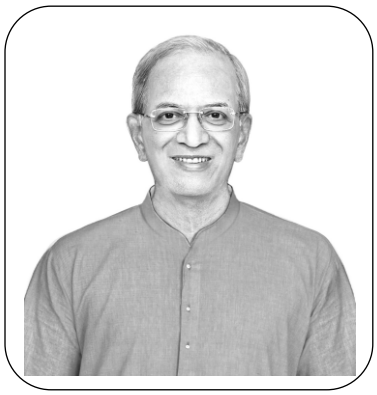

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थ : जिसने ज्ञानांजनरूप शलाकासे, अज्ञानरूप अन्धकारसे अन्ध हुए लोगोंकी आंखें खोलीं, उन गुरुको नमस्कार है।

परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम् ।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

अर्थ : जो परात्पर, चिदानन्दमय, निर्विकार, सबके हृदयमें अन्तर्यामी रूपसे स्थित, गुणातीत एवं गुणमय हैं, उन मयूरेश गणेशको मैं प्रणाम करता हूं।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

अर्थ : शरणागतकी पीडा दूर करनेवाली देवी, हमपर प्रसन्न हों । सम्पूर्ण जगतकी माता, प्रसन्न हों । विश्वेश्वरी, विश्वकी रक्षा करो । देवी, तुम्हीं चराचर जगतकी अधीश्वरी हो।

क्र. विषय विवरण	पृष्ठ क्रमांक

१. देव स्तुति	०१
२. सम्पादकीय	०३
३. श्रीगुरु उवाच	०४
४. धर्मधारा	
अ. सुवचन	०५
आ. शंका समाधान	०९
इ. सूक्ष्म जगत	११
५. उत्तिष्ठ कौन्तेय	१३
६. धर्म विडम्बनापर धर्माचार्योंका मौन घातक	२७
७. भारत-नेपाल संकट और हमारी भूमिका	२९
८. सन्त चरित्र	३१
८. आयुर्वेद ज्ञान	३४
९. कोरोना महामारीकी आयुर्वेदसे चिकित्सा	३६
१०. बाल संस्कार	३८

शास्त्र वचन

बलवानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धनः ।
श्रुतवानपि मूर्खोऽसौ यो धर्मविमुखो जनः ॥

अर्थ : जो व्यक्ति धर्म (कर्तव्यसे) विमुख होता है, वह बलवान होकर भी असमर्थ, धनवान होकर भी निर्धन तथा ज्ञानी होकर भी मूर्ख होता है।

卐卐卐卐卐

यस्तु सञ्चरते देशान् सेवते यस्तु पण्डितान् ।
तस्य विस्तारिता बुद्धिस्तैलबिन्दुरिवाम्भसि ॥

अर्थ : वह व्यक्ति जो विभिन्न देशोंमें घूमता है और विद्वानोंकी सेवा करता है, उस व्यक्तिकी बुद्धिका विस्तार उसी प्रकार होता है, जैसे तेलकी बून्द पानीमें गिरनेके पश्चात फैल जाती है।

卐卐卐卐卐

न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः ।
काकः सर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति ॥

अर्थ : लोगोंकी निन्दा (बुराई) किए बिना दुष्ट व्यक्तियोंको आनन्द नहीं आता । जैसे कौवा सब रसोंका भोग करता है; परन्तु गन्दगीके बिना उसे सन्तुष्टि नहीं मिलती है।

卐卐卐卐卐

वैदिक उपासना

अर्पण मूल्य - ₹ १०

सम्पादक : (पू.) तनुजा ठाकुर

वार्षिक सदस्यता शुल्क - ₹ १००

सह-सम्पादक : चैतन्य बंसल

पञ्चवार्षिक सदस्यता शुल्क - ₹ ४००

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, वैदिक उपासना पीठके लिए मैसर्स श्रीरंग ऑफसेट, १२३, देवी अहिल्या मार्ग, इन्दौर से (म.प्र.) मुद्रित कराकर कार्यालय : १५०/बी वैशाली नगर, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित

ईमेल : upasanawsp@gmail.com जालस्थल (website) : www.vedicupasanapeeth.org

सम्पर्क : +९१ ९७१७४९२५२३, ९९९९६७०९१५ (+ 91 9717492523 / 9999670915)

सम्पादकीय

भारत चीन सीमा विवादका कारण पूर्ववर्ती शासनकी कायरता

वर्ष २०१७ में भारत-चीन वास्तविक नियन्त्रण रेखाके डोकलाम क्षेत्रका विवाद हो या वर्तमानमें लद्दाखमें चल रहा सीमा विवाद हो, भारत शासनकी दृढता और हमारे सैनिकोंके साहसके कारण चीनको पीछे हटना पडा है; परन्तु तब भी इस कपटी चीनपर विश्वास करना अयोग्य होगा। सर्वविदित है कि वर्ष १९६२ में चीन भारतपर आक्रमणकर भारतकी सहस्रों वर्ग किलोमीटर भूमि हडप चुका है और भारतके पूर्ववर्ती शासक कायरकी भांति व्यवहार करते रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि चीनकी साम्यवादी क्रान्तिके उपरान्त, चीनके साम्यवादी शासनको भारतद्वारा, मात्र तीन माह पश्चात अर्थात ३० दिसम्बर १९४९ को मान्यता दे दी थी।

इसी चीनने १ जनवरी १९५० को तिब्बतपर अपना अधिकार बताया और अक्तूबर १९५० में तिब्बतपर आक्रमण करके उसे अपने नियन्त्रणमें ले लिया गया। तब दलाईलामाने भारतसे सैन्य सहायताकी मांग की; परन्तु उन्हें कोई सहायता नहीं भेजी गई और २९ अप्रैल १९५४ को भारतने तिब्बतपर चीनका अधिकार स्वीकारकर उसे चीनका एक प्रान्त मान लिया। कुछ समय पश्चात नेहरूने फारमोसा, क्वेमोई तथा मात्सू द्वीपोंपर भी चीनके अधिकारोंको मान्यता दे दी।

कालान्तरमें संसदमें चीनके विरुद्ध स्वर मुखरित हुए तो नेहरूने कहा कि हमारे लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हम 'महान' देश चीनके साथ मित्रताके सम्बन्ध बनाएं रखें ! यह भी ज्ञातव्य है कि भारत और चीनके मध्य २ सहस्र किलोमीटरकी सीमारेखा है। वर्ष १९५८ में चीनने अरुणाचल प्रदेशमें प्रवेश कर लिया था। नेहरूको इसके बारेमें बताया गया था; परन्तु नेहरूने लोकसभामें कहा कि मैं इस स्थितिको भयावह रूपमें नहीं देखता हूं और स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हमें बिना उद्विग्नता और कोलाहल किए स्थितिका सामना करना है।

८ सितम्बर १९५९ को चीनने भारतके ५० सहस्र वर्गमील क्षेत्रपर अपना अधिकार बता दिया। अक्तूबर १९५९ को चीनी सेनाने भारतमें प्रवेशकर भारतीय सैनिकोंकी हत्या कर दी थी और १० सैनिकोंको बन्दी बना लिया, तदुपरान्त १९६२ में चीनने भारतपर आक्रमण किया और कई क्षेत्रोंपर अनधिकार कर लिया; किन्तु तब भी भारतने चीनी दूतावासको बन्द नहीं किया और नेहरू संयुक्त राष्ट्रमें चीनके प्रतिनिधित्वपर उसका साथ देते रहे। इस युद्धके समय भारतकी वायुसेना चीनसे बहुत अधिक सशक्त थी; परन्तु इसके उपयोगकी भी अनुमति भारतके कायर शासकोंने नहीं दी और परिणाम पराजयके रूपमें सामने आया।

पुनः वर्ष २०१३ में चीनने घुसपैठ की और भारतकी भूमिपर अतिक्रमण कर लिया और तत्कालीन प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंहने निन्दनीय वक्तव्य दिया कि हम सीमा विवादको 'तूल' देनेके पक्षमें नहीं हैं।

चीन आज भी वही कर रहा है; परन्तु उसे कडा उत्तर भारतद्वारा दिया जा रहा है, जिसका जनसामान्यद्वारा स्वागत किया जा रहा है और इस चीनसे भयभीत होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है; क्योंकि चीन भले ही शक्तिशाली हो; परन्तु युद्ध शस्त्रास्त्रके साथ, साहससे भी लडे जाते हैं और साहसका भारतीय सैनिकोंमें कोई अभाव नहीं है। इसका प्रमाण विगत दिनों भारतीय सैनिक, अपनी सीमामें घुसे, चीनी सैनिकोंकी पिटाई करके दे चुके हैं। अब चीनको समझ लेना चाहिए कि यह साम्यवाद समर्थकोंका भारत नहीं है; अपितु स्वाभिमानियोंका भारत है और यह डरता नहीं लडता है।

भारत शासन भी पूर्ववर्ती कायर शासकोंद्वाराकी गई चूक न करे और चीनको उसकी भाषामें समझानेकी सिद्धता रखे ! यह देश भगवान कृष्णका देश है, जिन्होंने धर्मरक्षण व कर्तव्यपालन हेतु ही युद्ध करनेका आदेश दिया था।

श्रीगुरु उवाच

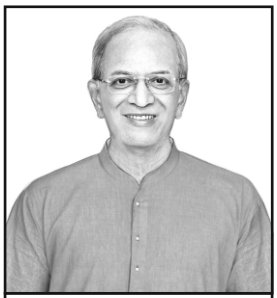

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले
सनातन संस्थाके संस्थापक

पुरातनकालमें सर्वजन साधना करते थे; इसलिए उन्हें अन्य लोगोंसे कैसे बोला जाए ?, अन्योंसे कैसे व्यवहार करें ?, यह सिखानेकी आवश्यकता नहीं होती थी । यह बाल्यकालसे ही उन्हें आता था; परन्तु अब यह प्रत्येकको सिखाना पडता है।

卐卐卐卐卐

जब चाकरीमें थोडासा धन प्राप्त करने हेतु सात या आठ घण्टे चाकरी परिश्रम करना पडता है तो सर्वज्ञ, सर्वव्यापी एवं सर्वसामर्थ्यवान ईश्वरकी प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण आयुष्य नहीं देना होगा क्या ?

卐卐卐卐卐

युवावस्थामें साधना करनेका महत्त्व

वृद्धावस्था आनेपर वृद्धावस्था अर्थात क्या ? इसका अनुभव होता है । इस अनुभवके उपरान्त वृद्धावस्था देनेवाला पुनर्जन्म नहीं चाहिए, ऐसा प्रतीत होने लगता है; परन्तु तबतक साधना करके पुनर्जन्म टालनेका समय निकल चुका होता है, ऐसा न हो; इसलिए युवावस्थासे ही साधना करें।

卐卐卐卐卐

चुनाव जीतने हेतु राजनीतिज्ञोंको जनताको प्रलोभन देना पडता है। इसके विपरीत साधना करनेवालेको ईश्वर स्वयं चुनते हैं।

卐卐卐卐卐

साम्यवादियोंको प्रारब्ध इत्यादि शब्द भी ज्ञात नहीं होते; अतः वे साम्यवाद शब्दका उपयोगकर, उपहासके पात्र सिद्ध होते हैं।

卐卐卐卐卐

पाश्चात्य देश मायामें अग्रसर होनेकी शिक्षा देते हैं वहीं भारत, ईश्वरप्राप्तिके मार्गपर कैसे जाएं ?, यह सिखाता है।

हिन्दू (ईश्वरीय) राष्ट्रकी शिक्षण पद्धतिमें प्रत्येक विषयके अभ्यास समेत ईश्वरप्राप्ति कैसे की जाए ?, यह भी सिखाया जाएगा।

हिन्दू (ईश्वरीय) राष्ट्रकी शिक्षण पद्धति कैसी होगी ?, ऐसा प्रश्न कुछ जन पूछते हैं। इसका उत्तर है, नालन्दा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालयमें जिस प्रकार १४ विद्याएं एवं ६४ कलाएं सिखाते थे, उसी प्रकार शिक्षण दिया जाएगा; परन्तु उसमें इस माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति कैसे की जाए ?, यह भी सिखाया जाएगा।

卐卐卐卐卐

हास्यास्पद साम्यवाद

जनताका शिक्षण, आरोग्य, इच्छा-अनिच्छा इसमें भी साम्यवादी साम्यवाद नहीं ला सकते, ऐसेमें देशमें साम्यवाद क्या लाएंगे ?

卐卐卐卐卐

राजनीतिज्ञ, बुद्धिप्रामाण्यवादी अथवा वैज्ञानिकोंके कारण विदेशी भारतमें नहीं आते, वे सन्तोंके कारण एवं अध्यात्म तथा साधना सीखने आते हैं; तथापि हिन्दुओंको अध्यात्म तथा सन्तोंका मूल्य ज्ञात नहीं है।

卐卐卐卐卐

राजकीय पक्ष, यह देंगे, वह देंगे, कहकर जनताको स्वार्थी तथा अन्तमें दुःखी बनाते हैं । इसके विपरीत साधना धीरे-धीरे सर्वस्वका त्याग करना सिखाकर चिरन्तन आनन्दकी, ईश्वरकी प्राप्ति कैसे की जाए ?, यह सिखाती है।

卐卐卐卐卐

कहां कुटुम्बका अथवा अपनी जातिका हित देखनेवाले सङ्कुचित वृत्तिके मानव, तो कहां अनन्तकोटि ब्रह्माण्डके प्राणीमात्रका हित देखनेवाला ईश्वर।

- परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले

साभार : मराठी दैनिक सनातन प्रभात

(http://sanatanprabhat.org)

तनुजा ठाकुर
वैदिक उपासना पीठकी संस्थापिका

आजके लोगोंकी बौद्धिक क्षमता देखकर मैं अचम्भित हो जाती हूं। जब भी मैं किसी भी आश्रमके निवासी, कार्यकर्ता या साधकको खेतमें लगी शाक (तरकारी) तोडने हेतु कहती हूं तो वे उसमें लगे छोटे-बडे सब शाक तोड लाते हैं। अर्थात जो बहुत छोटे हैं, उन्हें नहीं तोडना चाहिए, यह सामान्यसा ज्ञान भी आजके लोगोंमें नहीं है। एक दिवस पूर्व एक साधिकाको मैंने बैंगन तोडने हेतु कहा तो उन्होंने उसमें जितने भी छोटे-बडे बैंगन थे, सब तोड लिए। पुनः आज एक ग्रामीण महिला श्रमिक और एक प्रशासनिक अधिकारीकी पूर्वसिद्धता करनेवाले कार्यकर्ताको भिण्डी तोडने हेतु कहा, तो उन दोनोंने भी यही किया। अर्थात शिक्षित हो या अशिक्षित, किसीके पास आज सामान्य ज्ञान नहीं रहा है; इसलिए उपासनाके गुरुकुलमें खेती करना भी सभीको अवश्य ही सिखाएंगे, ऐसा मैंने सोचा है।

卐卐卐卐卐

धर्मप्रसारके मध्य मेरा सुदूर पहाडी क्षेत्रोंमें भी जाना हुआ है और मैंने पाया कि वहांका जीवन समतल क्षेत्रोंमें (नदियोंके तटीय क्षेत्रमें) रहनेवालोंकी अपेक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण एवं कठिन होता है; किन्तु वे अपने कठोर परिश्रम, धर्मपालन एवं साधनासे वहां भी आनन्दीमें रहते हैं; किन्तु जब ये लोग महानगरोंमें आ जाते हैं तो अपने मूल संस्कारको त्याग देते हैं। मैंने पाया है कि वे मात्र दो या तीन पीढी यदि महानगरमें रह जाएं तो ये अपने संस्कारोंको ही नहीं भूल जाते हैं; अपितु अपने कुलाचार, कुलदेवी इत्यादि सबका विस्मरणकर स्वयंको उस महानगरका निवासी बताने लगते हैं। इसमें वैसे तो कोई समस्या नहीं है; किन्तु इनके इस आधुनिक आचरणसे इनके कुलदेवता और पितर दोनों रुष्ट हो जाते हैं और इन्हें भी ऐसे कष्टके कारण अनेक समस्याएं होने लगती हैं। ऐसे प्रकरण मैंने देहली और मुम्बईमें बहुत अधिक देखे हैं। ऐसे ही किसी पहाडी व्यक्तिने कहा कि अब तो पहाडोंमें गांवके गांव रिक्त हो चुके हैं, मात्र कुछ वृद्ध लोग वहां एकाकी रहते हैं तो ऐसे सभी लोगोंसे मैं एक अनुरोध करना चाहूंगी कि समय रहते अपने मूल स्थानसे जुड जाएं! वहां एक कच्चा-पक्का घर बना लें; क्योंकि आनेवाले कालमें महानगरोंमें रहना बहुत कठिन हो जाएगा। जैसे आज आप देख रहे हैं कि महानगरोंसे श्रमिक सहस्रों किलोमीटर पैदल चलकर अपने मूल ग्राम लौट रहे हैं, वैसे ही आनेवाले कालमें मध्यम वर्गको भी ऐसा ही करना पडेगा; इसलिए अभीसे चेत जाएं और अपने मूल ग्राममें कुछ सामान्य सुविधाएं करके रखें!

卐卐卐卐卐

हिन्दुओंकी अकर्मण्यताके कारण ही विश्वव्यापी हिन्दू धर्मराज्यका हुआ है एवं अभी भी हो रहा है लोप

समाचार सूत्रोंके अनुसार, वियतनाममें नवीं शताब्दीका शिवलिंग मिला है। भारत ही नहीं, विश्वके एक बडे भूभागमें हिन्दू संस्कृति और सभ्यता विद्यमान थी; किन्तु मात्र हिन्दुओंकी अकर्मण्यताके कारण हिन्दुओंका यह साम्राज्य अब भारतमें भी सङ्कुचित होता जा रहा है। हिन्दुओ, अब तो जागो अन्यथा आनेवाली पीढी हमें कभी क्षमा नहीं करेगी।

卐卐卐卐卐

पूर्वकालके लोग कितने समझदार होते थे; अपने छोटेसे छोटे घरमें भी पूरे वर्षका अनाज एकत्रितकर रखते थे और मैंने देखा है कि आज भी भारतका कृषक वर्ग अपने घरमें अपने हाथसे उपजाए अन्नको अपनी सम्पूर्ण वर्षकी आवश्यकताओंके लिए रखकर ही उसे बेचते हैं! अर्थात आजके पढे-लिखे लोगोंसे, ये लोग अधिक बुद्धिमान व दूरदर्शी होते हैं!

卐卐卐卐卐

आज सभी मात्र जीवित कैसे रहें ?, इस हेतु हैं प्रयासरत

जो स्थूलमें सामान्य व्यक्तिके साथ घटित होता है वह अनिष्ट शक्तियोंके सूक्ष्म आक्रमणके कारण समष्टि साधना करनेवाले साधकोंके साथ पहले ही घटित होता है, ऐसेमें जब पिछले कुछ वर्षोंसे समष्टि साधना करनेवाले साधकोंको अत्यधिक कष्ट हो रहा था तो हमारे श्रीगुरु कहते थे हमारे लिए आपातकाल आरम्भ हो चुका है । अभी आध्यात्मिक प्रगतिकी चिन्ता नहीं, मात्र साधनामें टिके रहनेका प्रयास करें । और आनेवाले आपातकालमें तो मात्र जीवित रहने हेतु प्रयास करना होगा, तब साधना (समष्टि) भी करना कठिन होगा । लीजिये वह समय भी आ गया है। सन्त कैसे द्रष्टा होते हैं, यह समझमें आता है । इसलिए सन्तोंकी बातें मानकर साधना करनी चाहिए।

卐卐卐卐卐

१००० विदेशी प्रतिष्ठानोंको देशमें लाकर स्वदेशीको बढावा देनेवाले आजके नेता !

हमारे राजनेता एक ओर स्वदेशी उत्पाद अपनाने हेतु कह रहे हैं और वहीं १००० विदेशी प्रतिष्ठान चीन छोडकर भारत आ रहे हैं। क्या जो भी स्वदेशी उत्पाद बनानेमें भारत सक्षम है ?, ऐसे विदेशी प्रतिष्ठानोंको वे भारत आनेसे प्रतिबन्धित करेंगे तो उत्तर होगा, 'नहीं' ! इससे ही नेताओंकी कथनी और करनीमें कितना अन्तर होता है ?, यह ज्ञात होता है । स्वदेशी उत्पादोंको प्रोत्साहन तभी मिलेगा जब विदेशी प्रतिष्ठानोंद्वारा ऐसे उत्पाद यहां बनाकर उनका विक्रय न हो । कलिका सबपर ऐसा प्रभाव है कि राजा और प्रजा सभी भ्रमित हैं।

卐卐卐卐卐

गृहबन्दीके मध्य प्रजाको व्यसनाधीनताकी आगमें झोंकनेवाले आजकी वणिक वृत्तिके राज्यकर्ता

इस देशमें पहले जमातियोंने १७ राज्योंमें कोरोनाके संक्रमणको फैलाया और अब मद्यपी (शराबी) मद्यको पाने हेतु गृहबन्दीके सब नियमोंको ताकपर रखकर इस देशके अनेक कोटि लोग जो अपना सब कुछ छोडकर गृहबन्दीके नियमका पालन कर रहे हैं, उनके त्यागका उपहास कर रहे हैं, सब सत्यानाश कर रहे हैं । जैसे आजके अधिकांश वृत्तपत्र अपनी प्रसारसंख्याको बढाने हेतु अर्धनग्न स्त्रियोंके छायाचित्रका सहारा लेते हैं, वैसे ही इस देशके राज्यकर्ताओंने आर्थिक व्यवस्था सुधारने हेतु अर्थात राजस्व बढाने हेतु गृहबन्दीमें सर्वप्रथम मद्यके भण्डार खोल दिए। कुछ राज्योंमें शासन मद्यको घर भी पहुंचानेकी व्यवस्था कर रही है। इससे अधिक बौद्धिक व नैतिक पतन इस देशका और क्या हो सकता है ? और आपको लगता है ऐसे नेतागण इस देशमें हिन्दू राष्ट्र लाएंगे ? वस्तुत: यह एक स्वर्णिम सन्धि थी, जिसमें लोगोंके व्यसनको कुछ समयतक गृहबन्दीका आधार लेकर छुडाया जा सकता था। जब लोगोंके पास आयका स्रोत नहीं है तो मद्यकी 'दुकानें' खोलनेका क्या औचित्य है और मद्यपी क्या घरमें जाकर शान्तिसे बैठेंगे ? पहले ही तीव्र अहं और अनेक दोषोंके कारण गृहबन्दीके मध्य अनेक परिवारोंमें घरेलू हिंसामें भारी वृद्धिके समाचार आ रहे हैं और इसके ऊपरसे मूढ नेतागण मात्र राजस्वके वृद्धि हेतु ऐसे निकृष्ट एवं समाजघातक निर्णय लेते हैं । आइए, आपको आंकडेके माध्यमसे इसका कारण बताते हैं तो आपको सब कुछ और भी सुस्पष्ट हो जाएगा :

क्या आप जानते हैं कि शासनने मद्यके (शराबकी) भण्डारोंको खोलनेकी अनुमति क्यों दी है ? इससे उत्तर प्रदेशको ३१००० कोटिकी, कर्नाटकको २१००० कोटिकी, महाराष्ट्रको १७००० कोटिकी और बंगालको १२००० कोटि रुपयोंकी आय होती है। मैंने कहा था न कि इस देशमें क्षत्रिय वर्णके शासक राज्य नहीं कर रहे हैं, ये क्षुद्र मानसिकताके वणिक प्रवृत्तिके शासक हैं, जिनका मूल हेतु सत्ताको बचाए रखना है और इस हेतु धन, उनका मूल केन्द्र बिन्दु होता है और वे उसके लिए कुछ भी कर सकते हैं।

ऐसा निधर्मी लोकतन्त्र जो समाजको व्यसनाधीन बनाता हो, उसका सर्वनाश हो एवं धर्मसापेक्ष हिन्दू राष्ट्रकी शीघ्र स्थापना हो, यह महाकालके चरणोंमें प्रार्थना है।

पूर्वजोंद्वारा अहिन्दुओंके घरोंसे रोटी-बेटीका सम्बन्ध न रखनेका कारण अब समाजको ज्ञात होने लगा है !

आजसे ४०-४५ वर्ष पूर्वतक कोई भी हिन्दू किसी मुसलमानके घरपर पानी भी नहीं पीता था; इसके पश्चात धर्मनिरपेक्षताका भूत धीरे-धीरे सबपर हावी होने लगा और हिन्दू मुसलमानोंके घरपर त्योहारोंमें जाकर खाने लगे और अब तो मुसलमानी 'होटलों'में जाकर उनके व्यञ्जन चटखारे लेकर खाते हैं। आज सामाजिक प्रसार माध्यमोंसे हिन्दुओंको धर्मान्धोंकी निकृष्ट 'थूकलीगी' वृत्तिका पता चला। कहीं धर्मान्ध हिन्दूके भोजनमें मूत्र मिलाते पकडे गए, कहीं मनुष्यका मल तो कहीं विषैला रसायन तो कहीं विष ! सोचती हूं, हमारे पूर्वज कितने बुद्धिमान थे कि विवशतावश उन्होंने उनका शासन तो स्वीकार कर लिया; किन्तु उनके हाथका पानी नहीं स्वीकार किया।

卐卐卐卐卐

सर्वधर्मसमभावका समर्थन व्यासपीठसे करनेवाले तथाकथित कथावाचकोंका विरोध समयकी है मांग

कुछ हिन्दू धर्माचार्योंने अब खुलकर उन कथावाचकोंका विरोध करना आरम्भ कर दिया है, जो सर्वधर्मसमभावका समर्थन व्यासपीठसे करते हैं। यह बहुत पहले ही होना चाहिए था; किन्तु देरसे ही सही, इसका निश्चित ही व्यापक प्रभाव पडेगा एवं हिन्दुओंके लिए एक स्वधर्माभिमानयुक्त नूतन कालका शुभारम्भ होगा। हम उनके इस विरोधका अनुमोदन करते हैं।

卐卐卐卐卐

सन्तोंके द्रष्टापणकी पुनः मिली प्रतीति

एक बार एक सन्त कह रहे थे कि हिन्दू राष्ट्रसे पूर्व आनेवाला काल ऐसा रहेगा कि विद्यार्थी विद्यालय भी नहीं जा पाएंगे। उनकी पढाईमें तीन-चार वर्षोंतक अनेक व्यवधान आएंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष्यमें वह सब चरितार्थ होते दिख रहा है। भारत भूमिमें ऐसे अनेक द्रष्टा सन्त हुए हैं, जो वर्तमान कालमें घटित होनेवाले सभी प्रसङ्गोंको पहले ही बता चुके थे और उनकेद्वारा इस विनाशका उपाय, 'मात्र और मात्र गुरुकृपा है', यह भी बार-बार बताया गया है; इसलिए अब तो किसी सन्तकी शरणमें जाकर उनके राष्ट्र और धर्मविषयक कार्यमें योगदान दें ! यह तो आपातकाल अभी आरम्भ ही हुआ है और मानवताको लज्जित करनेवाले अनेक प्रसङ्ग एवं हृदयविदारक दृश्य देखनेको मिल रहे हैं।

卐卐卐卐卐

स्त्रियो, पूर्वकाल समान ग्रीष्म ऋतुमें आगामी समयके लिए भोज्य पदार्थोंको बनाकर करें संरक्षित !

देहलीमें समाचार सूत्रोंसे ज्ञात हुआ है कि वहांकी सबसे मुख्य और विशाल शाक (सब्जी) मण्डीमें कुछ शाक विक्रेता एवं वहां कार्य करनेवालोंमें कोरोना विषाणु फैल गया है; अर्थात अब शाक बाहरसे लाकर बिना योग्य प्रकारसे धोकर खाना भी 'कोरोना' महामारीको आमन्त्रण देना होगा। मैंने देखा है कि आजकल अधिकांश स्त्रियां शाकको ठीकसे धोती भी नहीं हैं, कमसे कम इस कालमें तो शाकको गुनगुने पानी या 'सिरके'की कुछ बून्दें डालकर व्यवस्थित धोकर बनाएं !

कुछ समय पूर्व मैंने आपको बताया था कि काल विपरीत आ रहा है, अपने घरकी छत, बालकनी या बाहर जो भी छोटासा स्थान हो, उसमें दैनिक उपयोगकी शाक लगानेका प्रयास करें, यह भविष्यमें उत्पन्न होनेवाली ऐसी ही समस्याओंको जानकर बताया था। आज आपको ऐसे ही कुछ और उपयोगी तथ्य बताती हूं।

अभी ग्रीष्मकाल चल रहा है, आपको ज्ञात ही होगा कि पूर्वकालमें इस समय हमारे यहां 'बरसात'के लिए एवं वर्षभर उपयोग की जानेवाली अनेक प्रकारकी सामग्री बनाकर या सुखाकर रखी जाती थीं। स्त्रियो, आप भी इस ग्रीष्म ऋतुमें अच्छी धूपका लाभ उठाकर पूर्वकाल समान दैनिक उपयोगके लिए भोज्य पदार्थ बनाकर रख लें ! विश्वास मानें, आगे आपको इसका बहुत लाभ होगा, तो आप इस ग्रीष्म ऋतुमें क्या-क्या बना सकती हैं ?, वह बताती हूं और अभी तो आपके घरमें सभी सदस्य भी हैं तो आप उनका भी सहयोग ले सकती हैं। हमने पिछली ग्रीष्म ऋतुमें आलूके, चावल व साबूदानाके पापड

बनवाकर रखे थे तो आज यदि कोई भी आश्रममें आता है तो उन्हें अल्पाहारमें क्या दें ?, यह सोचना नहीं पडता है। साथ ही भिन्न प्रकारके अचार भी बनवाए थे; क्योंकि आश्रममें अकस्मात अतिथि आते ही रहते हैं; इसलिए यह सब पूर्वसिद्धता करके रखनी पडती है। तो आइए ! आप इस बार अगले दो माह क्या-क्या बनाकर रख सकते हैं ?, यह बताती हूं।

* कच्चे आम यदि मिलें तो उन्हें अमचूर बनाने हेतु सुखा लें !

* कच्चे आमकी धूपमें मीठा अचार बना लें ! इस हेतु कच्चे कामको 'कद्दुकश' करके उसका आधा रस निकाल दें एवं उसे धूपमें शक्कर, काली मिर्च या लाल मिर्च और काला लवण (नमक) या सामान्य 'नमक' डालकर मीठा अचार बना सकते हैं, इसे यदि आप प्रत्येक माह एक भी तीव्र धूप दिखा देंगी तो यह सम्पूर्ण वर्ष खाने योग्य रहता है। रसको आप उबालकर उसका पन्ना भी बनाकर उपयोग कर सकती हैं।

* वैसे ही पके आमका अमावट भी बनाकर रख सकती हैं, इस हेतु आपको आमका गूदा निकालकर उसमें गुड डालकर थोडी देर आगमें पकाकर मात्र सुखाना होता है, यह भी आप अपने घरके वयोवृद्धसे पूछ सकती हैं।

* आमका अचार तो आप सबको पता ही होगा कि कैसे बनता है ?, वह भी बनाकर रख लें, आनेवाले आपातकालमें उसे रोटी, पूरी, पराठेके साथ खाया जा सकता है।

* आमको छोटे टुकडोंमें काटकर उसकी खटाई बना लें, उसे भी दाल या शाकमें उपयोग कर सकते हैं। वह जब टमाटर या इमली न मिले तो उसके स्थानपर उपयोग किया जा सकता है।

* वैसे ही टमाटर या कन्द (प्याज) या लहसुन यदि आप खाते हैं तो उसे भी सुखाकर और उसका चूर्ण बनाकर रख सकते हैं।

* अदरकको भी सुखाकर, उसका सोंठ बनाकर रख सकते हैं।

* भिन्न दालोंकी बडियां बनाकर रख सकते हैं।

* आलूके, चावलके साबूदानाके एवं भिन्न दालोंके बहुत ही स्वादिष्ट पापड बनते हैं, उन्हें भी बनाकर रख लें, आनेवाले आपातकालमें इसका उपयोग हम सरलतासे कर सकते हैं। इसे बनानेकी विधि आप 'यूट्यूब'से, अपने घरपर देख सकते हैं या सगे सम्बन्धियोंसे भी पूछ सकते हैं। पहले दो या तीन बार थोडासा बनाएं, वह अच्छेसे बन जाए, तत्पश्चात सम्पूर्ण वर्षके लिए आपको जितना आवश्यक हो, वह बनाकर रख लें !

* वैसे ही फूल गोभी, बैंगन, करेले, भिण्डी इत्यादि भी सुखाकर रख सकते हैं, उन्हें भी जब शाक उपलब्ध न हो पाए तो उबालकर बनाया जा सकता है।

* हरा धनिया, कडी पत्ता, पुदीना, मेथी शाकको छांवमें या अपने घरके पंखेसे भी सुखा सकते हैं।

मैंने सोचा संयुक्त परिवारके लोपके साथ यह सब भी लुप्त हो रहा है; किन्तु आनेवाले कालकी भीषणताको देखते हुए आज इसे आपसे साझा करनेकी इच्छा हुई।

यह सब हमारे यहां आजसे बीस वर्ष पूर्व घर-घरमें बनता था; किन्तु आजकल वर्षभर सब शाक मिलनेके कारण और बाहर जाकर भोजन करनेके कारण या छोटे घर होनेके कारण अथवा अपर्याप्त धूप या सामग्रियोंको कैसे सुखाएं ? या उन्हें कैसे सङ्ग्रहितकर रखें ?, ऐसे 'बहाने' बनाकर हमने इन्हें बनाना बन्द कर दिया; किन्तु सत्य तो यह है कि इसके पीछे मुख्य कारण आलस्य ही है। किन्तु अब समय परिवर्तित हो रहा है और वह आपको हमारे पूर्वजोंकी सर्व पद्धतिको अपनानेका सङ्केत दे रहा है। समय रहते इस सङ्केतको समझकर स्वयंकी वृत्तिमें सुधार कर लें तो आपके लिए आपातकाल सुसह्य हो जाएगा। मुझे तो नियोजनबद्ध रहना अच्छा लगता है एवं थोडा दूरदर्शी होकर उसका नियोजन करनेसे बहुत अधिक लाभ मिलता है तो सोचा आपको भी यह सब बता दें।

सन्तोंने बताया है कि ऐसा काल आ रहा है कि तरबूजके छिलके भी खानेको मिल जाएं तो अपना सौभाग्य मानें; इसलिए आपातकालकी पूर्वसिद्धता अभीसे करके रखें !

卐卐卐卐卐

हमारे पूजाघरमें जो देवी-देवताओंके पुराने चित्र या टूटी हुई मूर्तियां होती हैं, उनका विसर्जन कब और कैसे करना चाहिए ?

उत्तर : आपको बताया ही था कि हमारे घरमें जो देवघर या पूजाघर होता है, वह हमारी वास्तुमें सात्त्विक स्पन्दन निर्माणकर देवताके तत्त्वको आकर्षित करता है; अतः उसका स्वच्छ, पवित्र व शास्त्रसम्मत होना अति आवश्यक होता है; इसलिए पूजाघरमें प्रत्येक दिवस अच्छेसे स्वच्छताकर नियमित वास्तु शुद्धि करें ! साथ ही पूजा घरमें यदि पुराने फटे हुए देवताओंके चित्र हों या टूटी या पुरानी मूर्तियां हों तो उन्हें अपने पूजाघरसे यथाशीघ्र हटा देना चाहिए। अब प्रश्न यह उठता है कि इन्हें कब विसर्जित करना चाहिए ? सामान्यत: यदि आपके घरमें कोई ऐसा पूजन होता हो, जिसमें आप किसी देवताकी मूर्ति या उनके निर्माल्यको विसर्जित करने हेतु नदीमें जाते हों तो उसी समय इन्हें भी विसर्जित कर देना चाहिए। जैसे गणेश पूजन, दुर्गा पूजा या सरस्वती पूजामें पूजित मूर्तिके साथ एक अन्य पात्रमें (नूतन टोकरी या टोकरा हो तो और भी उत्तम होता है) इन्हें भी ले लें और पूजित मूर्ति या विग्रहके साथ इन्हें भी विसर्जित करें ! अब इसकी पद्धति क्या होनी चाहिए ?, शास्त्र कहता है कि खण्डित मूर्ति या विग्रहकी पूजा एक भी दिन नहीं करनी चाहिए और उसे त्वरित विसर्जित करना चाहिए; किन्तु यदि चित्र पुराना हो रहा हो तो उसे किसी उत्सवके निस्तारणके समय, जब आप देवताके विग्रह या निर्माल्यके विसर्जन हेतु जाते हैं तो विसर्जित कर दें ! यह प्रक्रिया ही बनाकर रखें कि प्रत्येक वर्ष यह कृत्य दीपावलीसे पूर्व या तो गणेशोत्सवके समय, जो महाराष्ट्रमें बहुत प्रचलित है, या दुर्गा पूजाके समय कर लें ! किन्तु यदि आपने अज्ञानतामें अनेक देवी-देवताओंके चित्र या टूटी मूर्तियां रखी हैं तो उन्हें सर्वप्रथम आदरपूर्वक पञ्चोपचार पूजनकर, एक नूतन लाल सूतीवस्त्रमें लपेटकर, माथेपर या हाथमें किसी पीतलके पात्रमें टोकरेमें लेकर, किसी भी बहते हुए जल स्रोतमें विसर्जित करके आएं। यह कार्य आप किसी भी गुरुवारको कर सकते हैं, मात्र उस समय पञ्चक नहीं होना चाहिए।

卐卐卐卐卐

मैं पिछले एक माहसे एक दोषको न्यून करने हेतु स्वयंसूचना दे रहा हूं; किन्तु उसकी तीव्रता न्यून नहीं हो रही है ऐसेमें मुझे क्या करना चाहिए एवं मेरे दोष न्यून क्यों नहीं हो रहे हैं ? - यशपाल शर्मा, देहली

उत्तर : सर्वप्रथम यह जान लें कि दोषकी तीव्रता न्यून हो, इस हेतु निम्नलिखित सर्व प्रयास होने आवश्यक हैं -

१. चूकोंको स्वभावदोष सारिणीमें योग्य कृत्य, विचार या वृत्तिसे साथ लिखना आवश्यक होता है। यदि आप मात्र चूक लिखते हैं एवं उससे सम्बन्धित सूचना नहीं देते हैं तो आपके दोष शीघ्र दूर नहीं हो सकते हैं।

२. दोष न्यून हो इस हेतु प्रसङ्ग लिखकर, योग्य स्वयंसूचना बनाकर देनी चाहिए। जैसे जब-जब मुझे क्रोध आएगा, तब-तब मुझे भान होगा कि क्रोध करना मेरा दोष है और मैं शान्त हो जाऊंगा। ऐसी स्वयंसूचनासे दोषोंकी तीव्रता घटनेमें कोई लाभ नहीं होता है। इसलिए स्वयंसूचना अच्छेसे प्रसंग अनुसार एवं आपके मनको जो सहज स्वीकार हो वह देना चाहिए। जैसे जब-जब मैं अपनी पत्नीपर कार्यालय हेतु जानेके समय देरीसे भोजन बनाते हुए देखूंगा और उसपर क्रोध करूंगा तब-तब मुझे भान होगा कि प्रातः उसे भी बहुत कार्य रहते है; इसलिए उसपर क्रोध करनेके स्थानपर मैं बच्चोंको विद्यालय जाने हेतु सज्ज (तैयार) करनेमें सहायता करूंगा।

३. स्वयंसूचना देनेकी पद्धति भी योग्य होनी चाहिए अर्थात स्वयंसूचना देते समय मनका शान्त व स्थिर होना आवश्यक होता है। इस हेतु एक शान्त स्थानमें सुखासनमें बैठकर कुछ क्षण नामजप करके मनको एकाग्र करना चाहिए, उसके पश्चात एक स्वयंसूचनाको पांच बार

देना चाहिए। हम ऐसे पांच सत्र सम्पूर्ण दिवस कर सकते हैं। एक सत्रमें तीन दोष ले सकते हैं अर्थात एक दोष हेतु पांच बार स्वयंसूचना दोहराना है एवं इस प्रकार एक सत्रमें पन्द्रह स्वयंसूचनाएं होनी चाहिए।

४. जिन दोषोंसे सम्बन्धित हम सत्र कर रहे हैं उनके सम्बन्धमें स्वभावदोष सारिणीमें जो भी प्रगति अनुभव होता हो वह लिखना चाहिए। जैसे आज पत्नीपर क्रोध तो किया; किन्तु दो मिनिटमें ही उसे नियन्त्रित कर लिया । कार्यालयमें एक कर्मचारीकी अकर्मण्यतापर क्रोध आया; किन्तु व्यक्त नहीं किया। इस प्रकार जिन दोषोंके विषयमें हम स्वयंसूचना दे रहे हैं, उनके विषयमें प्रगति क्या हुई ?, यह भी नित्य भरना चाहिए।

५. स्वयंसूचना देते समय यदि हम प्रार्थना करें तो हमें और अधिक लाभ होता है। जैसे हे प्रभु, (अपने गुरुदेव या इष्ट देवताका नाम ले सकते हैं) अभी मैं दोष निर्मूलन हेतु स्वयंसूचना देने जा रहा हूं, इसे मैं निर्विघ्न कर सकूं इस हेतु आप मेरे चारों ओर अपने अस्त्र और शस्त्रसे अभेद्य सुरक्षा कवच निर्माण करें एवं मैं जो स्वयंसूचना देने जा रहा हूं, वह एक शस्त्र समान मेरे अन्तर्मनमें जाकर दोषोंको न्यून करनेमें सहायक हो, ऐसी आप कृपा करें और हमसे यह प्रक्रिया गम्भीरतासे एवं सातत्यसे होने दें!

६. हमारे दोष हमारे अनेक जन्मोंके संस्कारोंका ही परिणाम हैं; इसलिए वे त्वरित दूर नहीं होंगे; अतः हमें उन्हें दूर करने हेतु सातत्यसे व उत्साहसे प्रयास करना चाहिए। दोष न्यून होनेसे हम ईश्वरके निकट जा सकते हैं, यह भाव रखकर उन्हें दूर करने हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए।

७. एक स्वयंसूचनाको दो सप्ताहसे अधिक नहीं देना चाहिए; क्योंकि मन उसी सूचनाको स्वीकार नहीं करता है; अतः कोई दूसरा दोष एक सप्ताह या एक पक्ष लेकर पुनः पूर्ववाले दोषको लेना चाहिए।

उपरोक्त बताए सर्व तथ्योंको ध्यानमें रखनेसे एवं योग्य कृत्य करनेसे हमारे दोष अवश्य ही न्यून होते हैं।

आइए सीखें ! संस्कृतनिष्ठ हिन्दी

संस्कृतनिष्ठ हिन्दी अन्तर्गत हम आपको समय-समयपर उर्दू व हिन्दी शब्दोंके विषयमें बताते रहते हैं। इसी क्रममें इस माहसे कुछ ऐसे प्रचलित शब्दोंकी प्रयोग विधि बताएंगें, जो सामान्यतः अनुचित ढंगसे वाक्योंमें प्रयोग किए जाते हैं।

इस स्तम्भमें इस माहके शब्द हैं, सम्भावना और आशङ्का ! सामान्यतः कुछ प्रकरण घटित होनेके पूर्वानुमानको 'सम्भावना' कहा जाता है। जैसे 'आज भूकम्प आनेकी सम्भावना है', यहां 'सम्भावना' शब्दका प्रयोग अयोग्य है।

जब किसी घटनाके घटनेका पूर्वानुमान लगाया जाए और वह घटना सकारात्मक हो तो 'सम्भावना' शब्दका प्रयोग सम्यक होता है; किन्तु यदि नकारात्मक परिणामका अनुमान हो तो 'आशङ्का' शब्दका प्रयोग योग्य होगा।

जैसे एक किसानद्वारा वर्षा होनेके प्रकरणमें कहा जाएगा : 'आज वर्षा होनेकी सम्भावना है'; परन्तु जब उसी किसानका अन्न खुलेमें पडा हो तो वह कहेगा : 'आज वर्षा होनेकी आशङ्का है।'

卐卐卐卐卐

आइए, अब हम इस बारके अवैदिक और संस्कृतनिष्ठ शब्दोंके विषयमें जानते हैं :

१

आइए सीखें ! संस्कृतनिष्ठ हिन्दी

अवैदिक शब्द		संस्कृतनिष्ठ शब्द
कदम	-	पग, चरण
कारोबार	-	व्यापार, व्यवसाय
ब्यूटी पार्लर	-	सौन्दर्य वर्धनालय
नकली	-	बनावटी, कृत्रिम, अनुकृति
आफत	-	संकट, विपदा, दुःख, विपत्ति

सौजन्यसे : www.vedicupasanapeeth.org/hn

"संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा है"

गोलोककी बछियाद्वारा मांके थनको स्पर्थ करनेसे ही दूधमें आ जाती है दिव्यता

पिछले माहके मासिक पत्रिकामें हमने आपको यह बताया ही था कि उपासनाकी गोशालामें गोलोकसे एक उच्च कोटिके जीवका बछडीके रूपमें जन्म हुआ है। इस सम्बन्धमें आपको कुछ अनुभूतियां भी बताई थीं। आज इसी सम्बन्धमें एक साधकको उसकी मांके दूधको ग्रहण करनेसे अनुभूति हुई है।

यहां मानपुरमें एक सन्त जिनका देहत्याग हो चुका है, उनके साधक हैं जो उपासनाके शुभचिन्तक हैं। वे शासकीय अधिकारी हैं और अभी गृहबन्दीके मध्य अपने घर न जाकर यहीं मानपुरमें कहीं निवासकर अपना कार्य कर रहे हैं। हमारी बछियाके जन्मके दस दिवस पश्चात आए थे। हमने उन्हें दूधसे बना हुआ कोई मिष्टान्न खानेसे लिए दिया वह उन्हें बहुत ही दिव्य लगा। मैंने उनसे कहा "आप अभी जबतक मानपुरमें हैं तो हमारी गैयाका दूध ले जाएं, हमने सोच लिया है कि हमें दूधका विक्रय नहीं करना है, जो भी साधक आश्रममें हैं, वे इसका दूध, दही, तक्र (मट्ठा, छाछ) घी इत्यादिका सेवन करेंगे एवं आगुन्तक भी इसका सेवन कर सकते हैं। उन्हें देशी गायके दूधका महत्त्व ज्ञात है; इसलिए उन्होंने झटसे हामी भरी और कहा कि प्रतिदिन तो नहीं आ पाऊंगा; किन्तु दो चार दिनमें ले जाया करूंगा। हमने उन्हें प्रथम दिवस जब दूध दिया तो वे अगले दिवस आ गए और कहने लगे इस गायका दूध पीकर तो मेरा सत्त्व गुण जैसे बढ गया, आज मलावरोध (कब्ज) भी नहीं हुआ और साधनामें मन भी एकाग्र हुआ। अब तो मैं प्रतिदिन दूध लेने आऊंगा ! वस्तुत: यह उस बछडीद्वारा मांके थनको स्पर्श करनेके कारण ही होता है कि दूधकी सात्त्विकता और भी बढ जाती है। वो कहते हैं न 'प्रत्यक्षं किम प्रमाणं' ! भविष्यमें उपासनाके आश्रममें बहुतसे वैदिक अनुष्ठान होंगे; इसलिए गोलोकसे गोमाताका आगमन होने लगा है, वैसे ही जैसे हिन्दू राष्ट्रको चलाने हेतु उच्च लोकोंसे उच्च कोटिके साधक जीवोंका जन्म होने लगा है। श्रीगुरुकी इस विशेष कृपा हेतु हम उनके कृतज्ञ हैं, वे हमें इतना दे रहे हैं कि हमने उसकी कल्पना ही नहीं की थी ! मैं तो मात्र निष्काम भावसे व प्रेमसे उपासनाके गोवंशकी सेवा करवा रही थी, इस बातका मुझे भान ही नहीं था कि मेरी इस सेवाका परिणाम इस अलौकिक रूपमें मुझे प्राप्त होगा !

अनेक बार जब हम उस गैयाका दूध या दही खाते हैं तो ऐसा लगता है जैसे किसीने उसमें शर्करा (शक्कर) डाल दी हो, वह इतना मीठा लगता है। इस बछियाके जन्मसे पूर्व भी हम इसकी मांके दूधका सेवन करते थे; किन्तु इतनी मिठास कभी अनुभव नहीं की ! वह मिठास भी कुछ दिव्यसी होती है, उसे शब्दोंसे बताया नहीं जा सकता है।

卐卐卐卐卐

वर्तमान कालमें जैसे सामान्य व्यक्तियोंको और साधकोंको सूक्ष्म जगतकी अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट है। वैसे ही आजके अनेक कथावाचकोंको व प्रवचनकारोंको भी अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट है। इसके पीछे एक तो उनके जीवनमें योग्य गुरुका न होना है और दूसरा उनमें अनेक दोषों एवं तीव्र अहंका होना है। आप तो देख ही रहे हैं ऐसे कथावाचकोंने किस प्रकार धर्मका व्यापार करना आरम्भकर दिया है एवं धनके लोभमें 'अल्लाह और मौला'की स्तुतिमें गीत गाने व प्रवचन करने लगे हैं। वे अपनी लोकैषणामें इतने लिप्त हो चुके हैं कि व्यासपीठके पीछे तो अनेक अनैतिक कार्य करते ही हैं, साथ ही अब तो वे व्यासपीठको भी कलंकित करनेमें नहीं चूकते हैं। इसलिए हिन्दू राष्ट्रमें सभी धर्माचार्योंका आध्यात्मिक स्तर, प्रत्येक वर्ष सार्वजनिक किया जाएगा। इससे इन्हें स्वयं ही ज्ञात हो जाएगा कि वे अध्यात्ममें कहां हैं और उन्हें सन्त पदको प्राप्त करने हेतु और कितने प्रयास करने हैं ? धर्मप्रसार हेतु एक राष्ट्रीय समितिका गठन होगा एवं स्वतन्त्र रूपसे धर्मप्रसार करने हेतु इन्हें इस

समितिसे अनुमति लेनी होगी। इस समितिमें ऐसे सन्त होंगे जिन्हें आध्यात्मिक स्तरवाला तत्त्वज्ञान ज्ञात होगा एवं वे मिलकर धर्मप्रसारकोंका आध्यात्मिक स्तर बताएंगे ! इस देशमें हिन्दू राष्ट्र आते ही ऐसी धार्मिक अराजकता समाप्त हो जाएगी । इसलिए हिन्दू राष्ट्र चाहिए!

卐卐卐卐卐

'ऑनलाइन' दैनिक वृत्त पत्रमें लेख लिखते समय होनेवाली कष्टप्रद अनुभूतियां

पितरोंके छायाचित्र घरमें क्यों नहीं रखना चाहिए ? इस सम्बन्धमें प्रतिदिनके लेख लिखते समय भिन्न प्रकारके कष्ट हुए। २४ मई २०२० के दिवस इस लेखमाला अन्तर्गत लेख लिख रही थी तो संगणकमें 'वर्ड फाइल'में त्वरित टंकित (टाइप) नहीं हो रहा है और उसमें बहुत देर लग रही है; तो हमने दूसरा संगणक लिया; किन्तु उसकी भी स्थिति ऐसी ही थी इसलिए 'Whatsapp'को संगणकसे संयोजितकर उसपर टंकितकर लिखना पडा । पूर्वमें भी ऐसे कष्ट हुए है और यह भी 'व्हाट्सऐप्प'पर लिखते समय अनेक बार नष्ट हो (डिलिट) जाता है अर्थात कभी 'Whatsapp not responding' ऐसा सन्देश आता है तो कभी अपने आप टंकित विषय लुप्त हो जाता है या अटक जाता है और न ही वह 'कॉपी' होता है और न 'पोस्ट' होता है। सूक्ष्म
जगतकी गूढ बातोंको साझा करने हेतु नित्य मुझे कुछ नूतन अडचनोंका एवं उसपर उपाय सोचने पडते हैं, जैसे जब ऐसी अडचन आई तो मैं इसमें चार पंक्तियां टंकित करती थी एवं पुनः 'डॉक् फाइल'में संरक्षित (सेव) करती हूं, जिससे वह उड न जाए!

ऐसे लेख लिखते समय मुझे शारीरिक पीडा होना, हमारे संगणकपर आक्रमण होना इसकारण प्रसार कार्यमें बाधा होना, इस कारण आर्थिक रूपसे अनावश्यक व्ययका बढ जाना है, यह सब सामान्य बात है। पितृ दोषसे सम्बन्धितलेख लिखते समय सत्संगको सम्पादित (एडिट) करनेवाला संगणक स्वतः ही विकृत हो गया है अर्थात वे मुझे, हमारे प्रसार साहित्यको ऐसी बातें साझा करने हेतु कष्ट देते रहते हैं, अब मैं इसकी अभ्यस्त हो गई हूं!
और जैसे ही यह लेखमाला लिखनेका क्रम समाप्त हुआ कि संगणक व्यवस्थित चलने लगा!

वैसे ही दूसरा प्रकरण है 'आपातकालमें अपने घरमें देवत्व कैसे निर्माण करें ?, यह भी लेखमालासे सम्बन्धित है। ऐसा कैसे हो सकता है कि समाजको देवत्व निर्माण करने हेतु सिखाएं और सूक्ष्म जगतकी अनिष्ट शक्तियां उसे साक्षी भावसे देखें ! पिछले चार दिवससे जिस कक्षमें मैं सोती हूं और लेखन करती हूं वहां चारों ओर लाल चींटियां सर्वत्र भ्रमण कर रही हैं। लाल चीटियोंका इस प्रकारसे आना, अनिष्ट शक्तियोंका सूक्ष्म स्तरपर आक्रमणका सूक्ष्म प्रभाव है। वैसे यह कोई नूतन बात नहीं है। 'ऑनलाइन' दैनिक वृत्तपत्रमें देवत्व निर्माण करनेकी लेखमाला आरम्भ की है और उसे लाखों लोग पढ रहे हैं, उनमेंसे कुछ लोग जिनसे जो सम्भव है, वे वैसा आचरणमें भी ला रहे हैं तो उसका कुछ अनिष्ट प्रतिफल हमें तो आसुरी शक्तियां देंगी ही ! आपातकाल भी उनका ही लाया हुआ है। समाजके पास जब धर्म और साधना हेतु समय नहीं होता है तो सत्त्व-रज-तमका सूक्ष्म समीकरण बिगड जाता है, जिसके परिणामस्वरूप आसुरी शक्तियोंको बल मिलता है और वे भिन्न प्रकारसे कष्ट देने हेतु नियोजनकर सभीको कष्ट देती हैं।

इस प्रसंगसे यह सीखनेको मिलता है कि अनिष्ट शक्तियां कितनी सतर्कतासे सर्व निरीक्षण करती हैं और उसके ऊपर क्या करना चाहिए यह भी सोचती रहती हैं। यह मैं आपको इसलिए बता रही हूं ऐसी घटनाओंका होना यह संकेत देता है कि आज हिन्दुओंके घरमें देवत्व निर्माण हो, यह अनिष्ट शक्तियोंको अच्छा नहीं लगता है। वे वस्तुतः इस रूपमें मुझे अपना विरोध प्रकट कर रही हैं। वे दो चार दिवस और रहेंगी एवं उसके पश्चात चली जाएंगी; किन्तु समाजको यह बता रही हैं कि उन्हें इस प्रकारका लेखन रुचिकर नहीं लगता है।

जिहादपर समाचार करनेपर 'जी न्यूज'के सम्पादक सुधीर चौधरीके विरुद्ध केरल पुलिसने प्रकरण प्रविष्ट किया

'जी न्यूज'के मुख्य सम्पादक सुधीर चौधरीके विरुद्ध केरल पुलिसने प्रकरण प्रविष्ट किया है। संज्ञेय (गैर जमानती) अपराधकी धाराओंके अन्तर्गत उनके विरुद्ध प्राथमिकी प्रविष्ट की गई है। यह कार्यवाही ११ मार्चको प्रसारित 'DNA' समाचार कार्यक्रमके कारण की गई है। उनपर आरोप है कि अपने कार्यक्रममें उन्होंने इस्लामको अपमानित किया है। राष्ट्रवादी पत्रकारोंके विरुद्ध आजकल एक षड्यन्त्रके अन्तर्गत परिवाद प्रविष्ट कराए जा रहे हैं। कुछ दिवस पूर्व 'जी न्यूज'के पत्रकार सुधीर चौधरीने जम्मू और कश्मीरमें 'जिहाद'के एक प्रकार अर्थात 'भूमिजिहाद' पर अपने कार्यक्रम 'DNA' में विस्तृत समाचार प्रस्तुत किया था और इस षड्यन्त्रका रहस्योद्घाटन किया था, जिसका स्पष्ट सन्देश था कि यदि आप दशकों पुरानी छद्म 'धर्म निरपेक्षता'की रेखापर घुटने नहीं टेकोगे तो कारागारमें डाल दिया जाओगे।

जिहादपर बोलनेसे केरलमें प्राथमिकी प्रविष्ट हुई, यह तो समझमें आता है; क्योंकि केरल शासन स्वयं जिहादियोंका पोषक है; परन्तु हिन्दुओंको जाग्रत करनेपर हिन्दू ही मौन हैं, यह लज्जाजनक है ! हिन्दुओ, समय रहते जागें !

卐卐卐卐卐

बिहारमें मस्जिदको शक्तिशाली बनानेके लिए हिन्दू बालककी दी बलि, पुलिस प्रताडनाके पश्चात हिन्दू परिवारका पलायन

बिहार स्थित कटेयाके बेलाडीहमें पकौडे विक्रय करनेवाले राजेश जायसवालके बच्चेको कुछ मुसलमान युवक 'क्रिकेट'के बहाने बुलाकर मस्जिदमें ले गए, वहां पहलेसे उपस्थित उनके परिवारवालोंने उसका गला दबाकर हत्या कर दी, तत्पश्चात उसका शव नदीमें पत्थरसे बांधकर डुबो दिया ! उल्लेखनीय है कि गांवमें जिहादियोंका मानना था कि नूतन मस्जिद बननेसे पूर्व यदि किसी हिन्दूकी 'बलि' दें तो मस्जिद शक्तिशाली और प्रभावशाली हो जाएगी। इस प्रकरणमें पुलिस थानाध्यक्षने पहले तो परिवाद लिखनेसे आनाकानी की और बच्चेकी दुर्घटनासे मृत्यु होनेकी बात स्वीकारनेको कहा और भद्दे अपशब्द कहे ! पीडित परिवारने अब उत्तर प्रदेशमें किसी गुप्त स्थानपर शरण ली है।

यह प्रकरण सामने आ गया; किन्तु ज्ञात नहीं कि कितनी ही मस्जिदें बननेसे पूर्व ऐसे ही बलि दी जाती होंगी ? इससे स्पष्ट है कि मस्जिदें, हिन्दूद्रोही समाचार वाहिनियां और बिहार शासन सदृश शासकगण, ये सभी भारतके स्वास्थ्यके लिए ठीक नहीं हैं ! सभी हिन्दू मुखर होकर बिहार पुलिस व राज्य प्रशासनका मुखर होकर विरोध करें ! (०९.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

मध्यप्रदेशमें जिहादी कर रहे हिन्दू क्षेत्रोंके जल स्रोत सङ्क्रमित

समाचार वाहिनी 'सुदर्शन न्यूज'के पत्रकार शुभम त्रिपाठीने सामाजिक जालस्थल 'ट्विटर' पर एक 'वीडियो' साझा किया, जिसमें मध्य प्रदेशके दमोह जनपदकी सन्तोषी माता नामक पहाडीपर क्षेत्रको जल प्रदान करनेवाले जल स्रोतमें (पानीकी टंकीमें) जिहादी स्नान करते दिखाई दे रहे हैं ! स्नानके मध्य वह उसीमें थूक व मूत्र भी त्याग रहे हैं ! जिहादियोंके क्षेत्रमें जलका कोई अभाव नहीं है; परन्तु इस जल स्रोतका जल हिन्दू निवासी क्षेत्रमें जाता है, जिस कारण वह इस जलको सङ्क्रमित करने हेतु प्रयासकर रहे हैं !

यदि हिन्दुओंने नेत्र मून्दकर ऐसे विक्षिप्त लोगोंके प्रति कथित 'भाईचारा' दिखानेके स्थानपर, इनका विरोध किया होता और अपने क्षेत्रमें न बसने दिया होता तो आज सम्भवतः यह दिन न देखना पडता ! हिन्दुओ ! अभी भी जाग जाओ, इससे पूर्व कि अधिक देरी हो ! (०९.०५.२०२०)

गुजरातमें मस्जिदकी 'अजान'से किया जा रहा था धर्मान्धोंको शस्त्र उठानेका आह्वान

गुजरातके भुजकी एक मस्जिदसे रातको २:३० बजे एक 'अजान' दी गई, जिसमें कहा गया कि मुसलमानों उठो, शस्त्र उठाओ और अपने घरसे बाहर आओ ! अब्दुल्ला लुहार इमाम-ए-रब्बानी मस्जिदसे रात २:३० बजे घोषणा की कि मैं कच्छका राजा हूं। मुसलमानोंको जाग जाना चाहिए और अपने घरोंसे बाहर आना चाहिए।

इस प्रकारके प्रकरणसे स्पष्ट होता है कि धर्मान्धोंके मनमें हिन्दुओंके प्रति कितना विष भरा हुआ है। ये आधी रातको शस्त्र उठानेकी बातकर रहा है तो यदि हमने ध्यान नहीं दिया तो कहीं इस देशमें एक दिवस कश्मीर सदृश स्थिति न उत्पन्न हो जाए। गुजरात प्रशासन त्वरित इसपर कठोर कार्यवाही करे ! (०९.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

देहलीके अल्पसंख्यक आयोगके पदसे हटाया जाएगा जिहादी जफरुल इस्लाम

देहली अल्पसंख्यक आयोगके अध्यक्ष जफरुल इस्लामने एक लेखमें भारतके हिन्दुओंको अरबी मुसलमानोंकी धमकी दी ! जफरुलने कहा कि धन्यवाद दो कि भारतके मुसलमानोंने अरब जगतसे कट्टर हिन्दुओंद्वारा हो रहे 'घृणाके दुष्प्रचार, लिंचिंग और उपद्रवों'को लेकर कोई परिवाद (शिकायत) नहीं किया है। जिस दिन ऐसा हो जाएगा, उस दिन अरबके मुसलमान एक आंधी लेकर आएंगे, एक झंझावात खडाकर देंगे ! अब इस प्रकरणमें जिहादीको देहली अल्पसंख्यक आयोगके अध्यक्ष पदसे हटाए जानेकी प्रकिया आरम्भ हो चुकी है। इसकी जानकारी सोमवार, ११ मईको देहली शासनने उच्च न्यायालयमें दी। देहली शासनकी ओरसे बताया गया कि उपराज्यपालने यह पत्र ३० अप्रैलको ही लिखा था, जिसमें उन्होंने मुख्यमन्त्रीसे कहा था कि वो विभागको 'डीएमसी' अधिनियमकी 'धारा-४'के अन्तर्गत जफरूलके विरुद्ध कार्यवाही करनेका निर्देश दें।

जिहादीपर हुई कार्यवाहीके लिए इसके विरुद्ध मुखर होकर बोलनेवाले व वैधानिक प्रक्रियासे न्यायालय जानेवाले सभी हिन्दुत्वनिष्ठ अभिनन्दनके पात्र हैं ! सभी राष्ट्र व धर्मप्रेमी इसी प्रकार जिहादियोंके विरुद्ध मुखर होकर बोलें, जिससे उनपर उचित कार्यवाही करनेको शासकगण भी विवश हों !

卐卐卐卐卐

बंगालके हुगलीमें जिहादियोंद्वारा हिन्दुओंके घरोंपर किए आक्रमणको पुलिसने 'ताना मारने'का परिणाम बताया

बंगालमें हुगली जनपदके चन्दननगर व तेलिनपाडा क्षेत्रमें जिहादियोंने हिन्दुओंके घरों व व्यावसायिक स्थानोंपर आक्रमणकर क्षति पहुंचाई। समाचारके अनुसार, पुलिसद्वारा जिहादियोंको गृहबन्दी (लॉकडाउन) पालन करने हेतु बाध्य करने व 'कोरोना' रोगियोंको सङ्गरोधमें (क्वॉरण्टीनमें) भेजनेके कारण उनमें रोष उत्पन्न हो गया, जिसका परिणाम क्षेत्रके हिन्दू निवासियोंको भुगतना पडा। इसके पश्चात इस साम्प्रदायिक हिंसाको बंगाल पुलिसने 'ताना मारने'का परिणाम बताया। ममता बनर्जीके कृपापात्र चन्दन नगर पुलिस आयुक्त हुमायूं कबीरने कहा कि चन्दन नगरमें कुछ लोगोंको 'कोरोना' पाए जानेके पश्चात हिन्दुओंने उर्दी बाजारमें मुसलमानोंपर कटाक्ष किया। उसके पश्चात ही मुसलमानोंको क्रोध आया और 'सॉकेट बम', 'गैस सिलिण्डर', 'तलवारों', धारदार शस्त्रों, लोहेकी छडों और ईंट-पत्थरोंसे आक्रमण किया।

जिहादियोंको हिन्दुओंपर आक्रमण करनेका एक अवसर मात्र चाहिए, यह तो सर्वविदित है; परन्तु जब ममता शासनका संरक्षणप्राप्त पुलिस आयुक्त यह भाषा बोले तो समझना चाहिए कि हिन्दुओंका अस्तित्व वहां संकटमें है। हिन्दुओ, अब स्वयं ही अपने रक्षक बनें और इसके लिए राजनीतिक दलोंसे अपेक्षा छोडकर एकजुट हो जाएं ! (१५.०५.२०२०)

'जैन बेकरी' में कोई मुसलमानकर्मी नहीं, 'फोटोशॉप'कर भडकाया था

गत दिवसोंमें चेनैके 'जैन बेकर्स एण्ड कन्फेक्शनरी'के एक विज्ञापनके कारण, जिसमें 'नो मुस्लिम स्टाफ'वाली बात कही गई थी, उसे लेकर सामाजिक प्रसार माध्यमपर विवाद हुआ और 'बेकरी'के स्वामी प्रशान्त गुप्ताको 'धार्मिक भेदभाव' करनेके प्रकरणमें बन्दी बना लिया गया था; परन्तु इसके पश्चात इस प्रकरणमें उजागर हुआ कि जिस चित्रके कारण यह विवाद बढा, वह चित्र रिजवान निजामी नामक जिहादीद्वारा 'फोटोशॉप' किया गया था, जिसे 'बेकरी'की छवि बिगाडनेके लिए प्रसारित किया जा रहा था। अब रिजवानके विरुद्ध प्राथमिकी प्रविष्ट करवा दी गई है।

भारतके संविधानमें न्याय सबके लिए समान है। आज भी अनेक जिहादी संस्थान केवल मुसलमानोंको चाकरीपर रखते हैं तो जब हिन्दू अपनी सुरक्षा हेतु ऐसा करें, तो वह अपराध क्यों बन जाता है ? एक देशमें दो विधान क्यों ? इसीका लाभ रिजवान सदृश जिहादी हिन्दुओंको अपमानित करनेके लिए उठाते हैं; परन्तु अब यह परिवर्तित होना चाहिए और इसके लिए हिन्दुओंको ही मुखर होकर बोलना पडेगा।

卐卐卐卐卐

पंजाब, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेशमें साधुओंपर आक्रमण

मथुराके वृन्दावनमें साधु तमाल कृष्णदासपर जिहादियोंद्वारा आक्रमणकर उन्हें चोटिल करनेका प्रकरण उजागर हुआ है। पुलिसके अनुसार, यह मठके निवासियोंके आपसी विवादके कारण हुआ। क्षेत्राधिकारीने बताया कि मुख्य अभियुक्त सच्चिदानन्दको बन्दी बना लिया है। अन्य दो अभियुक्त पलायनकर गए हैं। आरती अग्रवाल नामक महिलाने 'ट्वीट' करके इस समाचारको लिखते हुए कहा था कि यह निर्दयतापूर्ण आक्रमण दो गुण्डोंने किया था, जो बांग्लादेशी थे तथा सभी गुण्डे पलायनकर गए हैं और वे भी बाहरसे थे। मथुरा पुलिस इस घटनाकी वास्तविकता छुपा रही है।

वहीं महाराष्ट्रके पालघर प्रकरणके पश्चात नान्देड जनपदमें लिङ्गायत समाजके साधुओंकी निर्मम हत्याका प्रकरण उजागर हुआ है। मृतक साधुका नाम रूद्र पशुपति महाराज व उनके सहयोगीका नाम भगवान राम शिंदे है। हत्याका मुख्य आरोपी साईनाथ राम बताया जा रहा है, जो द्वारसे आश्रममें प्रवेश हुआ था तथा हत्या करनेके उपरान्त शवोंको चारपहिया वाहनसे ले जाने लगा; परन्तु वाहन मुख्य द्वारमें फंस गया व उसी मध्य आश्रमके दो सेवादार भी जाग गए और आरोपीको पकडने हेतु दौडे; परन्तु वह भाग निकला!

एक अन्य समाचारके अनुसार पंजाबके रूपनगरमें 'श्रीमुनिदेशम आश्रम'में एक ८० वर्षीय सन्त महात्मा योगेश्वर स्वामीजीकी निर्मम हत्याकर दी गई ! वे गृहबन्दीके कारण एकाकी ही रह रहे थे। उनकी एक बाजू काट दी गई, सिर धडसे पृथककर दिया गया एवं सिरके केश उखाड दिए गए ! उनका कक्ष रक्तसे लथपथ था व शरीर गल चुका था ! सन्तका जन्म हिमाचलमें हुआ था; परन्तु वे पंजाबमें रह रहे थे। लोग बताते हैं कि बाबा सदैव हिन्दुत्वके प्रचार-प्रसारके लिए चिन्तित रहते थे। इन्दिरा गांधीके समय गोरक्षाके लिए साधुओंने जो आन्दोलन किया था, उन्होंने उसमें बढ-चढकर भाग लिया था, इसके लिए वो कारावास भी गए थे।

वहीं पंजाबके ही काठगढ थाना क्षेत्रमें पुनः एक सन्त महायोगेश्वरजीकी हत्याकर दी गई है। यह ८५ वर्षीय सन्त हिमाचल प्रदेशके रहनेवाले थे और पिछले ४० वर्षोंसे इसी आश्रममें रह रहे थे। सन्तके एक शिष्यद्वारा पुलिसको सूचित करनेपर, थाना प्रभारीने उन्हें मृत एवं गला-सडा घोषित करके शव-परीक्षणालयके लिए भेज दिया। सन्तके भाई दिनेश कुमारके परिवादके अनुसार, गृहबन्दीके कारण श्रद्धालुओंका आवागमन न्यून हो चुका था तथा आश्रमकी तीन एकड भूमिपर अनुचित अधिकार करने हेतु हत्याकी शंका की जा सकती है।

एक अन्य समाचारके अनुसार, महाराष्ट्रके पालघरमें पुनः साधुओंपर आक्रमणकी एक घटना घटित हुई है ! यह घटना मुम्बई -अहमदाबाद राजमार्गके किनारे स्थित भालीगांवकी है । यहां तीन चोरोंद्वारा दो साधुओंके निवासमें प्रवेशकर उनसे चोरी और मारपीट की गई है। ये तीनों आरोपी इसलिए क्रोधित थे; क्योंकि इन साधुओंने उन्हें शिवमन्दिरके निकट आमके वृक्षपर पत्थर मारनेके कारण डांटा था; इसीलिए क्रोधित होकर इन्होंने साधुओंपर आक्रमणकर उन्हें चोटिलकर दिया तथा उनकी सामग्री लूट ली । उल्लेखनीय है कि गत दिवसोंमें महाराष्ट्रके पालघरमें ही दो साधुओंकी निर्मम हत्या की गई थी।

एक अन्य समाचारके अनुसार राजस्थानके राजसमंदके दिवेर थाना क्षेत्रके गुना गांवमें महादेव मन्दिरके सन्त प्रेमदासने रविवार, २४ मईको अपने आश्रममें फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इससे पूर्व सन्तद्वारा 'वीडियो'पर सन्देश मुद्रित (रिकॉर्ड) किया, जिसमें बताया गया कि कुछ दिवस पूर्व एक महिलाने उनपर दुष्कर्मका आरोप लगाया, जिसके पश्चात उसके पति और महिला आयोगकी सदस्या सहित ५ लोगोंने १५ लाख रुपएकी मांग की थी और आत्मसम्मान व सन्त सम्मानको बचानेके लिए उन्होंने आत्महत्याकर ली।

देशके विभिन्न भागोंमें साधुओंपर बढते आक्रमण, विशेषतः शिवाजी महाराजके राज्यमें ऐसा होना, चिन्ताका विषय है। सन्तोंकी हत्याका प्रकरण भी भारतमें जिहादका तथा ईसाई 'मिशनरियों'के षड्यन्त्रका ही एक घटक है, जिसमें ऊपरसे लूट या मारपीटका कारण दिखाया जाता है, वह कांग्रेस शासन अन्तर्गत पंजाब हो या कांग्रेस समर्थित महाराष्ट्र; परन्तु हिन्दू धर्मके रक्षक साधुओंको मारकर वे धर्मको नष्ट करना चाहते हैं । सभी हिन्दू इसके विरुद्ध मुखर होकर सामने आएं व शासनपर साधु-सन्तोंकी रक्षा हेतु दबाव बनाएं !

卐卐卐卐卐

जाकिर नाईकने जिहादी विषवमन करते हुए इस्लामिक राष्ट्रोंसे भारतको कच्चा तेल व 'पॉम ऑयल' निर्यातपर प्रतिबन्ध लगाने तथा हिन्दुओंको बन्दी बनानेको कहा

हिन्दुओंके विरोधमें सदैव विषैले व्याख्यान देनेवाले जिहादी उपदेशक व 'इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन'के संस्थापक जाकिर नाईकने सामाजिक जालस्थल 'यूट्यूब'पर अपना 'वीडियो' साझा करते हुए समस्त इस्लामिक राष्ट्रोंसे भारतको कच्चे तेल व ताड (पॉम) तेलके निर्यातपर प्रतिबन्ध लगानेकी मांग की है। उनके अनुसार यदि ऐसे प्रयास किए गए तो भारतमें मुसलमानोंपर होते उत्पीडनके प्रकरणोंमें होती वृद्धि रोकी जा सकती है । नाईकने यह भी कहा कि वह कुवैतके अधिवक्ताओंसे आग्रह करेंगे कि भारतमें इस्लामपर आपत्तिजनक टिप्पणी करनेवाले भारतीयोंके नामकी विशेष सूची बनाकर उसे संगणकमें सुरक्षित रखें एवं भविष्यमें जब वे भारतीय भ्रमण हेतु इस्लामिक राष्ट्रोंमें आएं तो उन्हें त्वरित बन्दी बनाकर कारावासमें डाल दिया जाए ! इन प्रयासोंसे इस्लामपर टिप्पणी करनेवाले व्यक्तियोंकी संख्या भी २५% तक अल्प होगी।

एक अन्य प्रकरणमें 'टाइम्स ऑफ इण्डिया'ने एक समाचार साझा किया, जिसके अनुसार ब्रिटेन राष्ट्रमें प्रसार नियन्त्रक संस्था 'यूके मीडिया वॉच डॉग ऑफकॉम'द्वारा आतंकी जाकिर नाईकके 'पीस टीवी'पर घृणात्मक व्याख्यान प्रसारित करनेके विरोध स्वरूप २.७५ कोटि रूपएका आर्थिक दण्ड लगाया गया है । संस्थाके अनुसार 'पीस टीवी' ब्रिटेनके मुसलमान नागरिकोंको हत्या करनेके विषयमें निरन्तर उत्तेजितकर व अन्य समुदायके व्यक्तियों हेतु अपमानजनक शब्दोंका प्रयोग करता आ रहा है, जो ब्रिटेन राष्ट्रके प्रसार नियमोंके विरुद्ध है; अतः इसी कारण 'पीस टीवी उर्दू' के अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) धारकको १८३ लाख रुपए व पीस टीवीको ९१ लाख रुपएका आर्थिक दण्ड लगाया गया है।

अब विश्वके अन्य राष्ट्रोंको भी इस्लामकी नीतियोंके विषयमें भान हो चला है, तो अब अर्थदण्डसे कुछ नहीं होगा। सभी राष्ट्र इन्हें अपने देशोंसे प्रतिबन्धित करे! (१७.०५.२०)

卐卐卐卐卐

पाकिस्तानमें हिन्दुओंपर हो रहे अत्याचार

पाकिस्तानके बहावलपुरमें अल्पसंख्यक हिन्दुओंके घरोंको 'बुलडोजर' चलाकर उन्हें मिट्टीमें मिला दिया गया। पाकिस्तानके आवासमन्त्री तारिक बशीर चीमाके आदेशपर हिन्दुओंके घरोंको बनानेके स्थानपर तोड दिया गया और अनेक अल्पसंख्यकोंको आवासविहीनकर दिया गया। वहांके निवासियोंने बार-बार विनती की और रोते बिलखते रहे; किन्तु कार्यकर्ताओंने मन्त्रीका आदेश बताकर उनकी एक भी नहीं सुनी। लोगोंके पूछनेपर कि वे अब कहां रहेंगे तो किसीने भी कोई उत्तर नहीं दिया और निर्दयतासे 'बुलडोजर' चलाकर घरोंको तोडते रहे। इस समय वे लोग अब कहां रह रहे हैं ?, कोई जानकारी नहीं है। इस प्रकरणमें भारतीय दूतावासने भी अभीतक कोई पग नहीं उठाया है। भारतमें नागरिकता संशोधन प्रस्ताव पारित होनेके पश्चात पाकिस्तानके बहावलपुरसे अनेक लोग आ चुके हैं और उन्होंने अपनी अश्रुभरी आंखोंसे आपबीती बताई है।

वहीं सिन्ध प्रान्तमें हिन्दुओंका आरोप है कि तबलीगी जमातद्वारा उन्हें प्रताडितकर उनके घरोंको ध्वस्तकर दिया गया। एक हिन्दू लडकेका अपहरण किया गया। सिन्ध प्रान्तके नासुरपुर, मटियारमें एक लघुचलचित्रमें हिन्दू, महिलाएं तथा छोटे बालक हाथोंमें पट्टिकाएं लिए धर्मपरिवर्तनका विरोध करते दृष्टिगत हो रहे हैं। हिन्दुओंने कहा हम मृत्युको वरण करेंगे; परन्तु धर्मपरिवर्तन नहीं करेंगे। एक महिलाने बताया कि उनके घरोंको तोडा गया है। उनकी सम्पत्तिपर बलपूर्वक अधिकारकर लिया गया है। उनसे कहा जाता है कि घर वापस चाहिए तो इस्लाम अपनाना होगा।

एक अन्य समाचारके अनुसार सिन्ध प्रान्तके घोटकीके बारझुण्डीमें रहनेवाली एक हिन्दू युवती कविता कुमारीका जिहादियोंद्वारा अपहरणकर, पीर अब्दुल हकद्वारा धर्मान्तरण करवाया गया। उल्लेखनीय है कि सिन्धमें सभी धर्मान्तरण उसकेद्वारा ही करवाए जाते हैं, इसके अतिरिक्त पाकिस्तानके प्रधानमन्त्री इमरान उसे अपना प्रेरणास्रोत बताते हैं और पाकिस्तान सेनाके प्रमुख कमर जावेद बाजवा स्वयं उसे धन देते हैं। पाकिस्तानी मानवाधिकार कार्यकर्ता ऑस्टिनने इससे सम्बन्धित 'वीडियो' भी साझा किया है।

वहीं पाकिस्तानने अयोध्यामें राममन्दिर निर्माणको रोकनेकी मांग की है! राममन्दिर निर्माणपर पाकिस्तान शासन और प्रधानमन्त्री इमरान खानने इसके विरोधमें प्रस्ताव पारित किया है। पाकिस्तानके विदेश मन्त्री शाह महमूद कुरैशीने लिखितमें राममन्दिरको रोकनेकी मांग की है। इमरान खानने कहा है कि भारतमें हिन्दुत्व शासन है और वहां मस्जिदके स्थानपर राममन्दिर बना रहे हैं, हम इस मन्दिरको सहन नहीं करेंगे!

एक अन्य समाचारके अनुसार, पाकिस्तानकी समाचार वाहिनी 'न्यूज वन'के सञ्चालकने १ मईको दक्षिणी बलूचिस्तानमें हुए एक सुरंगके विस्फोटके लिए भारतको उत्तरदायी बताया। भारतपर कटाक्ष करनेका प्रयास करते हुए पत्रकार कहता है कि हिन्दू बनिया अब अपनी 'औकात'से बाहर निकल गया है! यह कार्यक्रम ९ मईको प्रसारित किया गया था, जिसमें कार्यक्रमका सञ्चालक कहता है कि पाकिस्तानी सेनाके संयमको भारत उसकी निर्बलता न समझे।

स्पष्ट है कि पाकिस्तानी शासन हमारी भूमिपर श्रीरामका मन्दिर सहन नहीं कर पा रहा है, पत्रकार हिन्दुओंके प्रति विष उगल रहे हैं तो ऐसी विक्षिप्त मानसिकताके लोग पाकिस्तानमें खडे मन्दिरोंको और हिन्दुओंको कैसे सहनकर पाएंगे ? इसीसे इन विषधर सर्पोंकी विषकारी हिन्दूद्रोही मानसिकता प्रकट होती है तो ऐसे आतङ्की राष्ट्रके अन्तमें ही भारतका व सभी हिन्दुओंका कल्याण है। (२८.०५.२०२०)

नेताओंने किया महामारीके समयमें भी जिहादियोंका तुष्टीकरण

कांग्रेसके एक नेता इब्राहिमने कर्नाटकके मुख्यमन्त्री बीएस येदियुरप्पाको पत्र लिखकर ईदके अवसरपर मस्जिद और 'ईदगाह मैदानों'में मुसलमानोंको नमाज पढनेकी छूट देनेको कहा है । पत्रमें लिखा गया कि 'कोरोना'के कारण समूचे राज्यके मुसलमान मस्जिदोंमें नमाज पढनेमें असमर्थ हैं । वे अपने घरोंमें रहकर ही नमाजकर रहे हैं; इसलिए समुदायकी ओरसे एक परामर्श है कि शासन स्वास्थ्य विशेषज्ञोंका परामर्श लेकर मुसलमानोंको ईदके दिवस १ बजेतक मस्जिदोंमें नमाज करनेकी अनुमति दे ! ऐसेमें कांग्रेस मन्त्रीके इस अनुरोधके पश्चात उनकी आलोचना हो रही है।

गृहबन्दीके होते हुए झारखण्डके रांचीमें शुक्रवार १५ मईको अनवर खानके घरपर 'इफ्तार'का आयोजन किया गया। यह संज्ञानमें आते ही पुलिस वहां पहुंच गई। पुलिसको देखते ही 'इफ्तार'के लिए आए लोगोंने पुलिसपर पत्थरोंसे आक्रमणकर दिया । इस घटनाके पश्चात अधिक संख्यामें पुलिसबल भेजा गया; परन्तु पुलिस आनेसे पूर्व ही सभी आक्रमणकारी पलायनकर गए । प्रशिक्षु 'एसपी' के विजय शंकरने बताया कि उन लोगोंने पुलिस वाहनपरभी आक्रमण किया था । इस घटनामें गृहबन्दीके उल्लङ्घनके आरोपमें, १२ व्यक्तियोंके विरुद्ध प्रकरण पंजीकृत किया गया है । उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व १ मईको ग्रेटर नोएडामें पुलिसने पप्पू और मौसम नामक व्यक्तियोंको बन्दी बनाया था, जिनपर 'इफ्तार पार्टी' आयोजितकर लोगोंको एकत्र करनेका आरोप था । वहां गृहबन्दीके उल्लङ्घनके आरोपमें १९ व्यक्ति बन्दी बनाए गए थे।

शिवसेनाके मुखपत्र 'सामना'में प्रकाशित एक लेखसे रहस्योद्घाटन हुआ है कि महाराष्ट्रके मुंब्रामें समुदाय विशेषके लोगोंको गृहबन्दीके पश्चात भी ईद मनानेके लिए विशेष छूट दी गई । उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों मुंब्रामें कोरोना सङ्क्रमितोंकी संख्यामें अनायास वृद्धिको देखा गया था। देशकी इस आर्थिक राजधानीसे कोरोनाके बडी संख्यामें प्रकरण उजागर हो रहे हैं । सत्ताधारी पक्ष 'नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी'के नेता जितेंद्र आव्हाड भी पिछले माह 'कोरोना' सङ्क्रमित पाए गए थे । सामान्य लोगोंकी बात तो जाने ही दें, राज्यकी आन्तरिक सुरक्षा सम्भालनेवाले पुलिसकर्मियोंके भी सङ्क्रमणके प्रकरण सामने आ रहे हैं। अबतक २३०० पुलिसकर्मी 'कोरोना' सङ्क्रमित हो चुके हैं।

एक अन्य समाचारके अनुसार मुम्बईमें रविवार, २४ मईको ईदके कारण सामाजिक दूरीका (सोशल डिस्टेंसिङ्गगका) और गृहबन्दीका जिहादियोंद्वारा उल्लङ्घन किया गया; भिंडी बाजारमें भी यही दृश्य देखनेको मिला । 'एबीपी न्यूज'के समाचारके अनुसार, भिंडी बाजारमें जिहादियोंने नियम पालन करनेसे मना कर दिया । पुलिसके उपस्थित रहते भी लोग वस्तुएं क्रय-विक्रय करते रहे। 'इण्डिया टीवी'के पत्रकार सुशांत सिन्हाने बताया कि वहां लोगोंकोने कहा कि वर्षमें एक बार तो ईदका त्योहार आता है, क्या वो ये भी न करें ?

हिन्दू बहुल देशके हिन्दुओंने अपने पर्व, जो घरमें मनाए नहीं जा सकते थे, वे भी घरोंमें मनाए; परन्तु नमाज, जो कहीं भी पढी जा सकती है, उसके लिए उन्हें मस्जिद क्यों जाना है ? कांग्रेस नेता अपने 'वोट बैंक'के लिए प्रशासनपर दबावकी राजनीति कर रहे हैं, जबकि इनके समुदायकी जमातके लोग ही हैं, जो महामारीके सङ्क्रमण फैलानेके लिए मुख्य रूपसे उत्तरदायी हैं । ऐसे निर्णय प्रमाणित करते हैं कि वर्तमान नेतागण, मुस्लिम लीगसे भी घातक हो चुके हैं। (१५.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

बोकारो और बहराइचकी मस्जिदमें एकत्र जिहादियोंने किया पुलिसपर आक्रमण

'कोरोना' विषाणु सङ्क्रमणको देखते हुए सामूहिक नमाज निषेध होनेके पश्चात भी उत्तर प्रदेशके बहराइच और झारखण्डके बोकारोमें सामूहिक नमाजके लिए मस्जिदमें जिहादियोंद्वारा एकत्र होने और पुलिसकर्मियोंपर आक्रमण करनेके प्रकरण उजागर

हुए हैं, जिनमें कुछ पुलिसकर्मी गम्भीर रूपसे चोटिल हुए हैं ! मस्जिदके निकट नियुक्त पुलिसकर्मी रामप्रवेश और विनय कुमारने इन लोगोंको गृहबन्दीका (लॉकडाउनका) कहकर रोकनेका प्रयास किया तो इसी बातको लेकर जिहादियोंने पुलिसकर्मियोंपर पथरावकर दिया । इस प्रकरणके पश्चात कई आरोपियोंको, जिनमें कुछ महिलाए भी सम्मिलित हैं, पुलिसद्वारा बन्दी बनाया गया है।

मस्जिदके निकट ही पुलिसकर्मी नियुक्त करनेकी आवश्यता क्यों होती है ? मस्जिदसे ही पुलिसकर्मियोंपर पथराव क्यों होते हैं ? मन्दिरोंके सामने यह स्थिति क्यों नहीं होती ? बहिर्मुख राजनेता अब स्वयंसे यह प्रश्न करें और बताएं कि सर्वधर्मसमभाव, जिसका राग आलापकर आपने जिहादियोंका साहस इतना बढा दिया है, क्या वास्तवमें वैसा होता है क्या ? (२२.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

'बीफ रेसिपी'को गोमाता कहकर 'वीडियो' साझा करनेवाली रेहाना फातिमा 'भारत संचार निगम लिमिटेड'से हुई निलम्बित

२०१८ में सबरीमला मन्दिरमें घुसनेका प्रयास करनेवाली रेहाना फातिमाको 'बीएसएनएल' ने निलम्बितकर दिया है । कुछ दिवस पूर्व फातिमाने 'यूट्यूब'पर 'वीडियो' साझा करते हुए 'बीफ' पकानेकी विधिके मध्य मांसको गोमाता कहकर पुकारा था। उनकी इस कृतिसे हिन्दुओंकी भावनाएं आहत हुईं और इसके विरुद्ध अनेक व्यक्तियोंने 'बीएसएनएल' को परिवाद (शिकायत) किया, जिसके परिणामस्वरूप संस्थाने यह निर्णय लिया।

हिन्दूद्वेष्टा महिला, जो पहले भी हिन्दू धर्मका अपमान कर चुकी है, वह हिन्दू बहुल देशमें पूजनीय गोमाताका ऐसा अपमान करनेका दुस्साहस कर सकती है, यह सभी हिन्दुओं और इस देशके शासक और प्रशासक दोनों ही वर्गोंके लिए लज्जाका विषय है, ऐसा ही इस्लामका अपमान वह किसी मुसलमान देशमें कर सकती थी क्या ?, या किसी ईसाई बहुल देशमें ? हिन्दुओ, यह स्वयंसे प्रश्न करें और यदि अभी भी जाग्रत होकर एकजुट नहीं हुए तो स्वयंको मृत ही समझें ! (१५.०५.२०)

卐卐卐卐卐

अलीगढ व शामलीमें गोतस्करोंको पकडने गई पुलिसपर जिहादियोंका आक्रमण

उत्तर प्रदेशके अलीगढके सासनी गेट थाना क्षेत्रके कासिम नगर क्षेत्रमें गुरुवार, १४ मईको गोतस्करोंको बन्दी बनाने गए पुलिस दलपर जिहादी भीडने आक्रमण कर दिया । जिहादियोंने उनकी वेशभूषा फाड दी और आरोपियोंको छुडा लिया । इस प्रकरणमें दो महिलाएं बन्दी बनाई गई हैं । इसके पश्चात भारी संख्यामें पहुंचे पुलिस बलने स्थितिको सम्भाला । उल्लेखनीय है कि जब पुलिसने कासिम बाबा मस्जिदके दोनों आरोपियोंको पकडा तो इसकी जानकारी जैसे ही आसपासके लोगोंको हुई उन्होंने इसका विरोध करते हुए पुलिसके साथ मारपीट की।

वहीं उत्तर प्रदेशके शामली जनपदके झिंझाना थाना क्षेत्रमें गोहत्यारे अफजलको पकडने गए पुलिस दलपर जिहादियोंने आक्रमणकर दिया, जिसमें एक उप निरीक्षक (सब इंस्पेक्टर) समेत ३ पुलिसकर्मी चोटिल हो गए। पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवालने बताया कि गोहत्यारे अफजल सहित ३० लोगोंको बन्दी बनाया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व एक सूचनाके आधारपर टपराना पहुंची पुलिसने गोवंश कटानकी पूर्वसिद्धता कर रहे जिहादी युवक शाहनवाजको अपनी अभिरक्षामें (कस्टडीमें) लिया था । पुलिसने घटनास्थलसे चोरी किया गया एक बछडा व काटनेके उपकरण हस्तगत किए । बताया जा रहा है कि पकडा गया जिहादी युवक शाहनवाज इससे पूर्व भी गोवंशोंको काटनेके आरोपमें कारागृहकी यात्रा कर चुका है।

'जमिअत उलेमा-ए हिन्द'के मौलाना साजिद कासमीने आरोप लगाया है कि पुलिसद्वारा एक ही समुदायको लक्ष्य किया जा रहा है। उन्होंने ग्रामीणोंद्वारा किए आक्रमणपर न्यायिक जांचकी मांग की।

हिन्दू बहुल राष्ट्रमें जिहादी गाय काटते हैं और समूचा जिहादी गांव व मौलाना उसके समर्थनमें पुलिसपर आक्रमण करते हैं। अब समय है कि राज्य ऐसे प्रकरणमें देखते ही गोली मारनेके आदेश दें, तभी गोवध व जिहादियोंको रोका जा सकता है ।

卐卐卐卐卐

छह वर्षके धर्मान्ध बालकने मोदीको मारनेके लगाए 'नारे'

इंदौरके 'इंडेक्स मेडिकल कॉलेज' चिकित्सालयसे स्वस्थ हो चुके 'कोरोना' रोगियोंको १३ मईको घर भेजते समय कुछ लोग उनका उत्साहवर्धन कर रहे थे, तभी छह वर्षके बालकने उद्घोषकर कहा कि 'हम मोदीको मारेंगे ।' वहां उपस्थित भाजपा नेता राजेश सोनकरने उसके परिवारको समझानेका प्रयास किया कि इस प्रकारकी दुर्भावना अयोग्य है।

इस प्रकारके प्रकरणसे स्पष्ट होता है कि धर्मान्ध अपने बच्चोंके कोमल मनमें किस प्रकार अन्य धर्मोंके लोगोंके प्रति विष भरते रहते हैं और समय आनेपर यह विषवमन करते रहते हैं । (१५.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

बंगालमें, छठी कक्षाकी पाठ्य पुस्तकमें भगवान रामको बताया गया विदेशी

बंगालमें, छठी कक्षाकी पाठ्य पुस्तकमें भगवान रामको विदेशी और उन्हें भारतपर आक्रमण करनेवाला बताया गया है, साथ ही यह भी लिखा है कि अंग्रेजी शब्द 'रोमिंग'की उत्पत्ति 'राम'से हुई है और वे भारतीय मूलके राक्षस हैं।

इस पुस्तकका सम्पादक एक जिहादी शिरीन मसूद है । उसने स्वतन्त्रता सेनानी खुदीराम बोसको आतङ्कवादी कहकर पहले विवाद उत्पन्न किया था।

यह अत्यन्त गम्भीर घटना है और सामान्य हिन्दू तबतक ऐसी घटनाओं और समाचारोंको गम्भीरतासे नहीं लेता है, जबतक कि उसे इससे व्यक्तिगत रूपसे हानि न हो ! हिन्दुओ ! स्वयंकी भयङ्कर हानि हो, इसके पूर्व ही जाग जाओ !

हरियाणाके मेवातमें २५ वर्षोंमें मेवातके ५० गांव हिन्दूविहीन, इन्द्रप्रस्थमें चल रहा भूमि जिहाद

विश्व हिन्दू परिषदकी ओरसे मेवातमें हिन्दुओंके उत्पीडनको लेकर गठित की गई तीन सदस्यीय जांच समितिने अपने प्रतिवेदनमें बताया है कि विगत २५ वर्षोंमें मेवातके ५० गांव हिन्दूविहीन हो चुके हैं; किन्तु ऐसे भी अनेक गांव हैं, जहां हिन्दू परिवारोंकी संख्या ५ भी नहीं है। प्रतिवेदनके अनुसार सम्पूर्ण मेवातमें हिन्दू विरोधी व राष्ट्र विरोधी षड्यन्त्र हो रहा है। प्रताडनाके कारण हिन्दुओंका पलायन होता रहा है। २५ वर्षोंमें ५० गांव हिन्दूविहीन हो चुके हैं । हिन्दुओंको बलात धर्म परिवर्तनके लिए विवश किया जा रहा है। इसपर विश्व हिन्दू परिषदने मांग की है कि मेवातमें नियुक्त अधिकारियोंके स्थानपर निष्पक्ष अधिकारियोंकी नियुक्ति हो । हिन्दुओंपर अत्याचारसे सम्बन्धित प्रकरणमें थाना प्रभारीको उत्तरदायी ठहराया जाए । अवैध धन व शस्त्रास्त्रोंकी राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरणसे (एनआइएसे) जांच करवाई जाए । बांग्लादेशियों व रोहिंग्याकी घुसपैठकी जांच की जाए।

एक अन्य समाचारके अनुसार, 'कोरोना' सङ्क्रमितोंको गाडनेके (दफनानेके) नामपर इन्द्रप्रस्थके 'मिलेनियम पार्क' की भूमि अधिग्रहित करनेका षड्यन्त्र किया जा रहा है। 'विश्व हिन्दू परिषद'के अनुसार इसके पीछे 'देहली वक्फ बोर्ड' है और इसे देहली शासनका समर्थन प्राप्त है । 'वीएचपी'ने इस सम्बन्धमें उपराज्यपाल अनिल बैजलको पत्र लिखा है। पत्रमें आरोप लगाया है कि 'वक्फ बोर्ड' 'मिलेनियम पार्क'की भूमिपर अवैध अतिक्रमण कर रहा है; इसलिए 'जदीद कब्रिस्तान अहाले इस्लाम'का बोर्ड उद्यानके द्वारसे हटवाया जाए।

देशके समस्त हिन्दू व सभी सङ्गठन जबतक एक होकर समस्याका समाधान होनेतक नहीं विरोध करेंगे, तबतक यह स्थिति परिवर्तित नहीं हो सकती है, यह हिन्दुओंको अब अच्छेसे समझना होगा ! (२१.०५.२०२०)

'कोरोना' जांच हेतु बोले जानेपर मध्यप्रदेशमें जिहादियोंने की वृद्ध हिन्दू महिला सहित दो लोगोंकी हत्या

मध्य प्रदेशमें भिंडके प्रेमनगर क्षेत्रमें दो पडोसियोंके मध्य विवाद बढनेपर जिहादियोंके परिवारने वृद्ध हिन्दू महिलाकी हत्या कर दी ! पडोसी कपूरे खांका जामाता (दामाद) देहलीसे आया हुआ था, जो घरके बाहर बैठा था। कला जाटव नामक पडोसकी वृद्ध महिलाने उसे अपनी जांच करानेका परामर्श दिया। यही बात शीघ्र ही विवादमें परिवर्तित हो गई। कपूरे खांके परिवारने छतसे उनपर पत्थर बरसाए, जिससे महिलाकी उसी समय मृत्यु हो गई तथा दो अन्य भी गम्भीर रूपसे चोटिल हो गए; वृद्धाके भाईने भी चिकित्सालयमें प्राण त्याग दिए। इसी मध्य जामाता व कपूरे खां परिवार सहित भाग गए, तदुपरान्त पुलिस अधिकारी उदयभान सिंहद्वारा कपूरे खांको पांच लोगों सहित बन्दी बनाया जा चुका है।

स्पष्ट है कि जिहादी यदि पडोसी हो तो वह 'भाईचारे'के योग्य नहीं है; क्योंकि वे तो छोटीसे छोटी बातपर हिन्दुओंके भी प्राण ले सकते हैं, तो ऐसी विक्षिप्त मानसिकताके लोगोंके साथ 'भाईचारा' कोई करे भी तो कैसे ? (१७. ०५. २०२०)

卐卐卐卐卐

फैजल सिद्दीकीने 'टिकटॉक'पर 'एसिड अटैक'का किया महिमामण्डन, १.३४ कोटि लोग हैं प्रशंसक (फॉलोवर)

सामाजिक 'मीडिया एप्लीकेशन टिकटॉक'पर एक 'वीडियो' प्रसारित हुआ है, जिसमें 'एसिड अटैक'का महिमामण्डन किया गया है। फैजल सिद्दीकी, जिसके १.३४ कोटि प्रशंसक हैं, उसने 'तेजाब'की पीडा सहन करनेवाली महिलाओंका उपहास किया है। इसमें फैजल कहता है, "उसने तुम्हें छोड दिया, जिसके लिए तुमने मुझे छोडा था ?" इसके पश्चात लडकीके मुखपर 'तेजाब' फेंका जाता है और उसका मुख पूरा जल जाता है। लोगोंने फैजल व जिस युवतीने इसमें अभिनय किया है, उनके विरुद्ध कडी कार्यवाहीकी मांग की है। सामाजिक कार्यकर्ता आशीषने इसके विरुद्ध परिवाद कराया है; क्योंकि इसका सन्देश है कि यदि कोई महिला आपको अस्वीकार करती है तो प्रतिशोध लेनेके लिए उसपर 'तेजाब' फेंककर जला दो जो कि अत्यन्त निन्दनीय है।

समाजमें युवाओंको पथभ्रष्ट करनेवाले इस प्रकारके 'वीडियो' व मानवताद्रोही चीनी 'टिकटॉक' जैसी ' एप्लीकेशन' पर प्रतिबन्ध होना चाहिए। प्रशासनसे हम इसमें अभिनय करनेवालोंके विरुद्ध कडी कार्यवाहीकी मांग करते हैं। (१८.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

उत्तर प्रदेशमें छद्म निकले २८४६ मदरसे, पञ्जीयनकी अनुमति देना अस्वीकार

मदरसोंमें घोटालोंकी रोकथामके लिए २०१७ में 'उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद'ने 'मदरसा पोर्टल' आरम्भ किया था। सभी मदरसोंको इसपर पञ्जीकरण कराना अनिवार्यकर दिया गया था। यहां आए आवेदनोंके परीक्षणके पश्चात २८४६ मदरसे छद्म निकले!

पूर्ववर्ती शासकगणद्वारा 'वोटबैंक'की राजनीतिके चलते इमामोंको वेतन देना एवं नियमानुसार मदरसोंका पञ्जीकरण न करना, यह सामान्य बात थी। इसके पूर्व उत्तराखण्डमें 'आधार'से 'बैंकखाता' जोडनेपर २ लाख मदरसा छात्र लुप्त हो गए थे, जो छद्म रीतिसे क्षात्रवृति ले रहे थे; इसलिए अब समान शिक्षा और समान नागरिक संहिता आवश्यक है। (२०.०५.२०)

卐卐卐卐卐

राम मन्दिरके निर्माण हेतु भूमिके समतलीकरणमें निकली प्राचीन मूर्तियां

राम मन्दिर निर्माण कार्यके मध्य खुदाईमें प्राचीन अवशेष मिल रहे हैं। इस मध्य कई पुरातात्त्विक महत्त्वकी मूर्तियां, स्तम्भ और शिवलिङ्ग मिल रहे हैं। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यासके महामन्त्री चम्पत रायने कहा कि भूमि खुदाईके समय अनेक मूर्तियां और एक बडा शिवलिङ्ग भी मिला है। श्रीराम जन्मभूमि

तीर्थक्षेत्र न्यासका कहना है कि समतलीकरण कार्यके समय देवी-देवताओंकी खण्डित मूर्तियां, पुष्प, कलश सदृश कलाकृतियां,भवनके अर्द्ध मण्डलाकार पत्थर तथा इसके अतिरिक्त अनेक स्तम्भ व शिवलिङ्गकी आकृतियां मिली हैं।

सत्यकी ही विजय होती है। ये साक्ष्य उन सभी हिन्दूद्रोहियों व जिहादियोंको कडा उत्तर है, जो श्रीरामको काल्पनिक बताते आए हैं व राम जन्मभूमिकी सत्यताको सिद्धकर रहे हैं। यदि सभी हिन्दू सङ्गठित होकर आगे आएं तो निश्चित ही काशी और मथुराके पासकी मस्जिदें भी वहांसे अवश्य ही हटाई जा सकती हैं। (२१.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

हिन्दूविरोधी मानसिकतासे ग्रसित 'वेबसीरिज', 'पाताल लोक'पर भडके गोरखा समुदायने अनुष्का शर्माको भेजा 'नोटिस'

'अमेजन प्राइम'पर प्रकाशित हुई 'वेब सीरीज' 'पाताल लोक' को लेकर इसकी निर्माता अनुष्का शर्माको अधिवक्ता (वकील) वीरेन सिंह गुरुंगने एक अधिसूचना (नोटिस) भेजी है। इसमें आरोप लगाया गया है कि सुदीप शर्माद्वारा लिखित इस 'वेबसीरीज'में गोरखा समुदायका अपमान किया गया है। गुरुंगने बताया कि इसके दूसरे धारावाहिकमें एक महिला पुलिस अधिकारी एक नेपाली व्यक्तिसे पूछताछ करते समय ऐसे अपमानजनक जातिसूचक शब्दोंका प्रयोग करती हैं, जो स्वीकार नहीं किए जा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि 'अमेजन प्राइम'पर आए 'पाताल लोक'की कहानीमें हिन्दुओंके प्रति घृणा कूट-कूटकर भरी हुई है। कथानक बाहरी जमुना पार पुलिस स्थानकका (स्टेशनकी) है, जिसे 'पाताल लोक' बताया गया है, जहां पुलिस अधिकारी नियुक्त होनेसे बचते हैं।

आज हिन्दू इन नीतिशून्य अभिनेताओं व अभिनेत्रियोंको इतना सम्मान देते हैं और पैसेके ये लालची अभिनेतागण प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपसे अपने ही धर्मका अपमान करते हैं तथा जातिगत भेदभावको बढाते हैं। ऐसे लोग सम्मानके पात्र नहीं हैं, यह हिन्दुओंको अब ध्यान देना ही होगा अन्यथा ये लोग ऐसे ही परोक्ष रूपसे चलचित्र बनाकर हिन्दू धर्मका अपमान करते रहेंगे; इसलिए अधिवक्ता गुरुंगके इस दिशामें किए गए वैधानिक प्रयासका हम अनुमोदन करते हैं। (२१.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

मुसलमानोंको वैष्णो देवीके आशीर्वाद भवनमें दी जा रही 'इफ्तार'

जम्मू स्थित माता वैष्णो देवीके मन्दिरके आशीर्वाद भवनमें 'रमजान' के माहमें 'रोजा' रखनेवाले मुसलमानोंको 'इफ्तार' दी जा रही है ! यह समाचार 'श्राइन बोर्ड'के 'सीईओ' रमेश कुमारने दिया। उन्होंने कहा कि दूसरे प्रदेशोंसे आ रहे श्रमिकोंको वहां जांच और सङ्गरोधके (क्वारण्टीनके) लिए रखा जा रहा है। इस भवनकी क्षमता पांच सौ लोगोंको रखने की है। वहांके कर्मचारी रात्रिमें भी उन्हें भोजन करवा रहे हैं। रमेश कुमारके अनुसार अबतक इन लोगोंपर ८० लाख रुपए व्यय किए जा चुके हैं, जबकि 'कोरोना' महामारी हेतु भी डेढ कोटि रुपए व्यय हो चुके हैं। इसके पश्चात अब समितिने ईदके अवसरपर मुसलमानोंके लिए विशेष व्यवस्थाएं की हैं। सूचनाके अनुसार, 'श्राइन बोर्ड' ने यह पूर्वसिद्धता की है कि ईदके दिवस मुसलमानोंके लिए चना-पूडी और हलवा परोसनेकी व्यवस्था की जाएगी !

यही कारण है कि कोई भी देवालय शासनाधीन नहीं होना चाहिए। मस्जिदें अपने धनसे जिहाद करती हैं, महामारी फैलाती हैं और हिन्दू देवालय उन्हीं जिहादियोंको आश्रय देकर धन व्यर्थ कर रहे हैं, जबकि यह बात भी सभी जानते हैं कि मस्जिदें इस प्रकार आपदामें भोजनका प्रबन्ध कदापि नहीं करेंगी ! हिन्दुओ, मन्दिरोंसे अब नेताओंका नियन्त्रण हटे, इस हेतु हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु प्रयासरत हों! (२३.०५.२०२०)

卐卐卐卐卐

गोरखपुरकी मुसलमान शिक्षिकाने विद्यार्थियोंको संज्ञाके उदाहरणमें पाकिस्तानको बताया प्रिय राष्ट्र

गृहबन्दीके कारण भारतके विभिन्न विद्यालयोंद्वारा 'ऑनलाइन' (सांगणिक) माध्यमसे कक्षाओंका आयोजन किया जा रहा है। इसीके अन्तर्गत गोरखपुरके 'जीएन पब्लिक विद्यालय'में भी कक्षा चारके विद्यार्थियोंको संज्ञा समझाते हुए उनकी शिक्षिका शादाब खानमने यह उदाहरण लिखा, 'पाकिस्तान हमारा प्रिय राष्ट्र है, मैं पाकिस्तानी सेनामें भर्ती होऊंगा तथा रशीद मिनहद एक वीर सैनिक था।' कक्षा समाप्त होनेके पश्चात जब विद्यार्थियोंने अपने माता-पिताको इस विषयका ज्ञान कराया तो माता-पिताने कक्षाकी सामग्री जांचकर विवाद आरम्भ कर दिया। विरोधाभास होता देख शिक्षिकाने सामग्रीको त्वरित हटाया; परन्तु उससे पूर्व ही अभिभावकोंने विवादित सामग्रीका छायाचित्र उतार लिया था; अतः प्रकरण सभीके समक्ष आ गया। उसके बचावमें पतिका कहना है कि उसने अज्ञानतावश ऐसा किया है। सामाजिक प्रसार माध्यम तथा समाचार पत्रपर प्रकरण प्रकाशित होनेके पश्चात पुलिसद्वारा जांच आरम्भ कर दी गई है।

शिक्षिकाके पतिने उचित ही कहा है कि उसकी पत्नीने यह अज्ञानतावश किया है, एक ऐसी अज्ञानता, जो मदरसों व मस्जिदोंसे होकर समूचे जिहादी समुदायमें प्रसारित होकर भारतके प्रति विषवमन करती है, जिसे इस्लामके अनुसार 'जिहाद' भी कहा जा सकता है। हिन्दुओंने अब स्वयं ही यह देखना चाहिए कि जहां जिहादी शिक्षक हो अथवा शिक्षासे सम्बन्धित कार्याधिकारी हो, वहां अपने बच्चोंको भेजना चाहिए या नहीं ? (२५.०५.२०)

卐卐卐卐卐

देहलीके जामियासे पकडी गई आधुनिक (मॉडर्न) युवती हिना इस्लामिक पुस्तकोंको पढकर बनी थी आतङ्की

जामिया क्षेत्रसे पुलिसद्वारा अपने पति जहानजेबके साथ पकडी गई हिना बेगकी पुलिसद्वारा की गई जांचसे ज्ञात हुआ है कि वह पुणे विश्वविद्यालयसे प्रबन्धनमें स्नातक हुई तथा उसने अनेक अन्तरराष्ट्रीय संस्थानोंमें कार्य किया है। हिनाका इस्लामके प्रति झुकाव तब हुआ, जब उसकी भेंट २०१५ में, अपने भाई जुबैरकी पत्नी डालिया सचदेवासे हुई, जो एक हिन्दू थी। ये दोनों इस्लामपर बहुत समयतक चर्चा करती थीं, जिसके फलस्वरूप उसने अनेक इस्लामकी पुस्तकें पढीं। इसके साथ वह जाकिर नाइक, दक्षिणी अफ्रीकाके मुफ्ती मेंक और मोहम्मद फैज औरंगाबादके वक्तव्य सामाजिक प्रसार माध्यमपर सुनती रही। जब हिनाने 'आईएसआईएस'के बारेमें सुना तो उसने 'फेसबुक' और 'गूगल'पर इनके बारेमें शोध करना और पढना आरम्भ किया, तब हिनाने कश्मीर मूलके जहानबेगसे 'आईएसआईएस'की विचारधारा फैलानेके लिए विवाह किया। जहानबेग 'इस्लामिक स्टेट' 'खुरासान प्रारुप'के लिए नियुक्तियां करने लगा और ये देहलीमें बडे आक्रमणकी पूर्वसिद्धता कर रहे थे।

जिन पुस्तकों और उनके विद्वानोंको पढकर व सुनकर एक सामान्य युवती इतनी आगे बढ जाए कि वह अनेक लोगोंको बमसे उडाकर मारनेका निश्चय कर ले तो विचार करें, वह कथित 'धर्म' और उसकी कथित 'पुस्तकें' मानवके योग्य होंगी क्या ?

卐卐卐卐卐

देहली शासनने सिक्किमको बताया पृथक देश

देहली शासनने भारतके सिक्किम राज्यको पृथक देश बताया है। केजरीवाल शासनने समाचार पत्रमें 'सिविल डिफेंस कोर'में स्वयंसेवकके रूपमें नियुक्तिके लिए विज्ञापन प्रकाशित करवाया है, जिसमें उसने लिखवाया है, 'भारतका नागरिक हो या भूटान, नेपाल या सिक्किमकी प्रजा हो !' अर्थात वह भूटान, नेपालके साथ-साथ सिक्किमको भी एक देश बता रहा है, जबकि सिक्किम भारतका राज्य है। इसपर सिक्किमके मुख्यमन्त्रीने पत्र लिखकर इसे भारतके संविधान और सिक्किमके नागरिकोंका अपमान बताया तथा केजरीवाल शासनसे क्षमा मांगनेको कहा है।

इसपर मुख्यमन्त्री अरविन्द केजरीवालने इस विज्ञापनको 'वापस' लेते हुए सम्बन्धित अधिकारीको निलम्बित कर दिया है।

देहली शासन एक विज्ञापन निकलवा रहा है और एक अधिकारी स्वतः सिक्किमको पृथक देश कैसे बता सकता है और मुख्यमन्त्री रहते भी केजरीवाल इस तथ्यसे अनभिज्ञ कैसे रह सकते हैं ? यह सन्देहास्पद है। केन्द्र शासन त्वरित इस विषयमें संज्ञान लेकर कार्यवाही करे !

卐卐卐卐卐

केरलमें गृहबन्दीमें गिरिजाघरके भीतर विवाहित महिलाके साथ आपत्तिजनक स्थितिमें मिला पादरी

गृहबन्दीके मध्य सभी धार्मिक स्थल बन्द हैं; परन्तु केरलके इडुक्की जनपदमें कट्टप्पनाके वेल्लायमकुडीके एक कैथोलिक गिरिजाघरमें एक महिलाको प्रायः गिरिजाघरके भीतर जाते देखकर आस-पासके लोगोंको सन्देह हुआ। शुक्रवारको महिलाके आनेके पश्चात कुछ लोगोंने गिरिजाघरमें प्रवेश किया तो भीतर पादरी जेम्स मंगलसीरीको महिलाके साथ नग्न अवस्थामें पाया। इसे लेकर गिरिजाघरमें कोलाहल हो गया और कुछ समय पश्चात महिलाके साथ नग्न अवस्थामें पादरीके लिए गए चित्र सामाजिक प्रसार माध्यमपर (सोशल मीडियापर) प्रसारित हो गए, जिससे स्थानीय पुलिस भी प्रकरणकी जांचमें लग गई। जानकारीके अनुसार, महिला विवाहित है तथा दो बच्चोंकी मां है। स्थानीय लोगोंका आरोप है कि पादरीके आसपास रहनेवाली कई महिलाओंके साथ भी अनैतिक सम्बन्ध हैं।

धर्मान्तरणके कार्योंमें लगे ये गिरिजाघर अब अनैतिक कार्योंके केन्द्र बन चुके हैं, जहांसे आए दिन इस प्रकारके समाचार आते रहते हैं; किन्तु हिन्दू विरोधी 'मीडिया'द्वारा इनके अपराधोंको छुपानेका भरसक प्रयास किया जाता है। ऐसे पादरी लोगोंको क्या सिखाते होंगे ?, यह इस घटनासे ही स्पष्ट हो रहा है। अब धर्मके नामपर ऐसा प्रपञ्च करनेवाले लोगोंको भारतसे निकालनेका समय आ गया है; अतः हिन्दू एकजुट हों ! (२३.०५.२०)

卐卐卐卐卐

हिन्दुओंके विरोधसे झुका तमिलनाडु प्रशासन, नहीं ढकी जाएगी भारत माताकी प्रतिमा

तमिलनाडुके कन्याकुमारी जनपदके अन्तर्गत इस्साकि अम्मान मन्दिरके समक्ष भारत माताकी प्रतिमाको लेकर विवाद उत्पन्न हो गया, जिसके पश्चात ईसाई समुदायके प्रभावमें आकर प्रशासनने प्रतिमाको ढक दिया। इस कार्यवाहीसे हिन्दुओंमें रोष उत्पन्न हो गया तथा मुख्यमन्त्रीसे इसे हटवानेका आग्रहकर चेन्नैमें विरोध प्रदर्शन आयोजित हुए; अन्ततः प्रशासनकी ओरसे जनपदके सक्षम अधिकारीद्वारा प्रतिमासे आवरण हटानेका आदेश प्रेषित किया गया। अब प्रतिमासे आवरण हटानेकी चूक सुधारने हेतु 'भारत माता पूजन'के अन्तर्गत विशेष कार्यक्रमका आयोजन किया जा रहा है।

इससे स्पष्ट है कि धूर्त 'मिशनरियां' व उनके पोषक शासकगण कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों, यदि हिन्दू एक हैं तो हमें कोई पराजित नहीं कर सकता है। हिन्दुओ, अब एक हो जाएं; क्योंकि अब भारत माताकी प्रतिमाका विरोध करनेवालोंको देशसे बाहर निकालनेका समय आ गया है ! (२५.०५.२०)

卐卐卐卐卐

जिहादी जीशानने साजिद, अमजद और वाजिदके साथ मिलकर अपनी १० वर्षीय बहनके साथ सामूहिक दुष्कर्मकर की हत्या

राजस्थानके जयपुरमें जिहादी जीशानने अपने तीन मित्रोंके साथ मिलकर अपनी १० वर्षीय मन्दबुद्धि बहनसे सामूहिक दुष्कर्मकर उसकी हत्या कर दी है। मनोहरपुर थाना पुलिसने चारों आरोपियोंको शनिवार, २३ मईको बन्दी बनाया है। इनमें जीशान अली मुख्य आरोपी है, जो मृतक बच्चीका बडा भाई है। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक शंकर दत्त शर्माने बताया कि इस प्रकरणमें परिवारके शेष सदस्योंकी भूमिकाकी जांच की जा रही है।

जिहादी जब अपनी बहनके साथ कुकृत्य कर सकते हैं तो हिन्दुओ, विचार करें कि हमारी बहन-बेटियां कितनी सुरक्षित हैं ? ऐसे पैशाचिक मानसिकताके लोग भारतमें रहने योग्य नहीं हैं और जब राजपूतोंके राज्य, जयपुर सदृश नगरोंमें भी यह होने लगे तो हिन्दुओंने अपनी बहन-बेटियोंकी रक्षा हेतु भी सज्ज हो जाना चाहिए !

卐卐卐卐卐

वाहनमें खरोंच आनेपर जिहादियोंने शाक (सब्जी) विक्रेता सनातन दासको पीट-पीटकर मार डाला

असमके तेतेलिया गांवके सनातन दास, एक कारखानेमें श्रमिकके रूपमें कार्य करते थे; परन्तु गृहबन्दीके कारण 'फैक्ट्री' बन्द हो गई थी; अतः उन्होंने साइकलपर शाक (सब्जियां) क्रय करनेका कार्य आरम्भ किया था। इसी क्रममें उसकी साइकल एक चारपहिया वाहनसे टकरा गई, जिसमें असमगण परिषद (एजीपी) नेताका भाई फैजल अली व लाजिल अली था। वाहनपर थोडीसी खरोंचके लिए वे दोनों इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने सनातन दाससे विवाद किया व पीटना आरम्भ कर दिया एवं उसे गम्भीर अवस्थामें छोडकर भाग गए। स्थानीय लोगोंने सनातनको चिकित्सालयमें प्रविष्ट कराया; परन्तु वहां सनातन दासकी मृत्यु हो गई।

वाहनपर खरोंच आना तो मात्र एक 'बहाना' है, वस्तुतः यह जिहादियोंकी विषैली मानसिकताको दर्शाता है, जो किसी भी हिन्दूको देखकर जिहाद करनेका विचार करती है। दुःखद स्थिति यह है कि जिहादियोंने असमको आतङ्कका एक मुख्य केन्द्र बना दिया है और अब तो वे नेताओंके पदपर भी बैठने लगे हैं, यह स्थिति परिवर्तित हो; इसलिए हिन्दू राष्ट्रकी आवश्यकता है !

卐卐卐卐卐

उत्तर प्रदेश गृहबन्दीमें 'नमाज' पढनेके कारण जिहादियोंको बनाया गया बन्दी

उत्तरप्रदेशके औरैया जनपदके अजीतमल क्षेत्रमें सोमवार, २५ मईको सामूहिक नमाज पढनेके अपराधमें २६ लोगोंको बन्दी बनाया गया है, जबकि ८ लोग बन्दी बनानेसे पूर्व पलायन कर गए। 'कोरोना'के कारण 'धारा-१४४'के अन्तर्गत सभीको घरपर नमाज पढनेके आदेश थे । मुजफ्फरनगरमें भी खतौलीके कुछ लोग नमाज पढने एकत्रित हुए । वहां पुलिसने ३० लोगोंको अपनी अभिरक्षामें (हिरासतमें) लिया ।

सम्पूर्ण देशमें महामारीसे ग्रसित रोगियोंकी संख्यामें निरन्तर वृद्धि होनेपर भी ये धर्मान्ध इस महामारीके प्रति सतर्क नहीं हैं और अभी भी देशमें सर्वत्र इसे फैला रहे हैं। शासन अब इन्हें शीघ्र दण्डित करे, जिससे इनमें कुछ भय व्याप्त हो ।

卐卐卐卐卐

तिरुपति बालाजी मन्दिरकी सम्पत्ति विक्रयपर रोक, श्रद्धालुओंने किया बाध्य

श्रद्धालुओंद्वारा बाध्य होनेपर आंध्र प्रदेश शासनके जगनमोहन रेड्डीने तिरुपति मन्दिरकी ५० सम्पत्तियोंको अन्तिम निर्णय आनेतक विक्रयपर रोक लगाई है। रेड्डीने अपने मामा सुब्बा रेड्डीको मन्दिरके न्यासका मुखिया बनाया था, जिसका श्रद्धालुओंने कडा विरोध किया। रेड्डी शासनने अपना बचाव करते हुए पिछले शासक चन्द्रबाबू नायडूपर दोष मढा। उन्होंने मन्दिरके न्यासको पुनर्विचार करने हेतु कहा। मन्दिरके न्यासने इस सम्पत्तिको निष्प्रयोजन सम्पत्ति बताकर विक्रय करनेका निर्णय लिया था। यह सम्पत्ति मन्दिरसे दूर, तमिलनाडु, ऋषिकेश और आन्ध्र प्रदेशमें है । मन्दिरकी स्थितिसे दूर होनेके कारण न्यास प्रबन्धकोंको नियन्त्रण करनेमें कठिनाई हो रही थी। इस सम्पत्तिमें कृषि योग्य एवं निवास हेतु प्रासादस्थल भी हैं । उल्लेखनीय है कि १९७४ से २०१६ तक इस मन्दिरकी १२९ सम्पत्तियोंको बेचा जा चुका है ।

वामपन्थियों व ईसाईपक्षी लोगोंद्वारा हिन्दूधर्मको नष्ट करनेके लिए मन्दिरोंकी सम्पत्तिको भी नष्ट किया जा रहा है। क्या ये हिन्दूद्रोही शासक, किसी मस्जिद अथवा गिरिजाघरकी सम्पत्तिको विक्रय कर सकते हैं ? सभी हिन्दुओंको इसी प्रकार सङ्गठित होकर ऐसे प्रकरणोंका विरोध करना चाहिए ।

हिन्दुओंके विरोधसे झुका तमिलनाडु प्रशासन, नहीं ढकी जाएगी भारत माताकी प्रतिमा

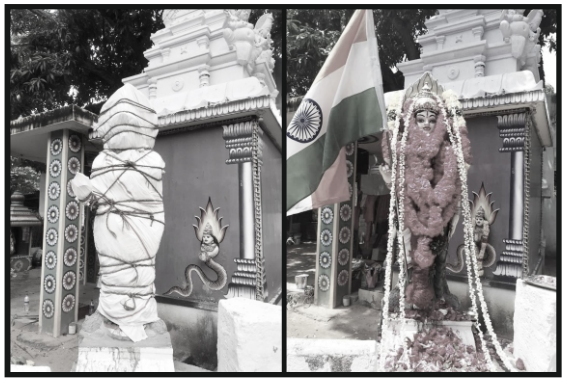

तमिलनाडुके कन्याकुमारी जनपदके अन्तर्गत इस्साकि अम्मान मन्दिरके समक्ष भारत माताकी प्रतिमाको लेकर विवाद उत्पन्न हो गया, जिसके पश्चात ईसाई समुदायके प्रभावमें आकर प्रशासनने प्रतिमाको ढक दिया गया था। इस कार्यवाहीसे हिन्दुओंमें रोष उत्पन्न हो गया तथा मुख्यमन्त्रीसे इसे हटवानेका आग्रहकर चेन्नईमें विरोध प्रदर्शन आयोजित हुए; अन्ततः प्रशासनकी ओरसे जनपदके मुख्य अधिकारीद्वारा (कलेक्टरद्वारा) प्रतिमासे आवरण हटानेका आदेश जारी किया गया। अब प्रतिमासे आवरण हटानेके उपलक्ष्यमें 'भारत माता पूजन'के अन्तर्गत विशेष कार्यक्रमका आयोजन किया जा रहा है।

इससे स्पष्ट है कि धूर्त मिशनरियां व उनके पोषक शासकगण कितने ही शक्तिशाली क्यों न हो, यदि हिन्दू एक हैं तो हमें कोई पराजित नहीं कर सकता है। हिन्दुओ, अब एक हो जाएं; क्योंकि अब देशद्रोहियोंको देशसे बाहर निकालनेका समय आ गया है!

卐卐卐卐卐

जिहादियोंद्वारा हिन्दू देवताओंकी की गई इस जिहादी विडम्बनासे अनभिज्ञ विवेकहीन हिन्दू

एक सामाजिक जालस्थलपर एक समाचारमें दिखा कि एक पोटलीमें (पाउचमें) 'जय मां तुलसी' नामक तमाखुका (तम्बाकूका) निर्माण और विक्रय कोई 'हुसैन सेल्स कार्पोरेशन', कायमगंज, उत्तर प्रदेशद्वारा किया जा रहा है। इस संस्थानका स्वामी निश्चित ही मुसलमान ही होगा और वह हिन्दू देवीके नामपर तमाखुका (तम्बाकूका) विक्रय कर रहा है। इसपर अधिकांश लोगोंने ध्यान नहीं दिया और इस तथ्यको उपेक्षित कर दिया। बात केवल किसी व्यसनी या तामसिक उत्पादके नामकरणकी नहीं है; अपितु हिन्दुओंकी चेतना, आज किस स्तरपर सुप्तावस्थामें है ?, इस तथ्यकी ओर भी संकेत करती है। कोई विधर्मी व्यक्ति जानबूझकर अपने उत्पादका नाम 'जय मां तुलसी' रखता है और उसे बिना रोक-टोकके हिन्दुओंके देशमें ही विक्रय कर पाता है, क्या यह तथ्य आश्चर्यजनक नहीं है ? ऐसी घटनाओंको सामान्य समझनेकी भूल ही अबतक हिन्दू समाज करते आया है और यही रोग अब एक विकराल महामारी बन चुका है।

योग्य विधान न होनेके कारण शासन सम्भवतः कोई कठोर कार्यवाही न कर पाए; परन्तु धर्मनिष्ठ हिन्दू इस विषयको अपने स्वरोंको मुखरितकर ऐसे कुकृत्य करनेवालोंको हतोत्साहित अवश्य कर सकते हैं। सभी हिन्दू इस प्रकारका कोई भी तामसिक उत्पाद क्रय न करें, ऐसी आपसे अपेक्षा है!

卐卐卐卐卐

'इस्कॉन'पर अभद्र टिप्पणी करनेके सन्दर्भमें हास्यकार सुरलीन कौर व 'शेमारू'के विरुद्ध परिवाद प्रविष्ट

'इस्कॉन'ने अभिनेत्री और 'स्टैंड-अप कॉमेडियन' सुरलीन कौर और मनोरञ्जन संस्थान 'शेमारू'के विरुद्ध सङ्गठन और हिन्दुओंके अपमान करनेका परिवाद (शिकायत) प्रविष्ट कराया है। 'शेमारू'ने सामाजिक जालस्थलके विभिन्न माध्यमोंपर हास्य कलाकार सुरलीन कौरका एक 'वीडियो' साझा किया, जिसमें सुरलीन कौरने कहा कि ऋषियोंने कामुक ग्रन्थोंको लिखनेके लिए संस्कृत भाषाका उपयोग किया। हिन्दू अश्लीलता (पोर्न) पसन्द करते हैं।

उल्लेखनीय है कि इस प्रकरणके पश्चात 'शेमारू प्राइवेट लिमिटेड'ने क्षमा मांगी, जिसे 'इस्कॉन'ने स्वीकार कर लिया।

क्षमा मांगनेपर उसे स्वीकार कर लिया गया; परन्तु यह उचित नहीं है; क्योंकि इससे व्यापक सन्देश नहीं जाएगा और कलको पुनः कोई हिन्दू धर्मकी विडम्बना करेगा। सभी हिन्दू ऐसे नटों व हिन्दूद्रोही संस्थानोंका वैध मार्गसे विरोधकर इन्हें प्रतिबन्धित करवाएं !

-चैतन्य बंसल

धर्म विडम्बनापर धर्माचार्योंका मौन है घातक

क्या भगवान कृष्णकी कल्पना सुदर्शन चक्रके बिना की जा सकती है ? या भगवान शिवकी मूर्ति बिना त्रिशूलके बनाई जा सकती है ? अथवा मां महाकाली, हाथमें खड्ग और बिना खप्पडके कैसी लगेंगी ? क्या यह विचार भी किया जा सकता है ? या माता सरस्वतीके हाथोंमें कोई वाममार्गी मूर्तिकार, वीणाके स्थानपर खड्ग थमा दे तो क्या यह योग्य होगा ? निश्चित ही नहीं; किन्तु गुजरातके एक तथाकथित कथावाचकको शाब्दिक ज्ञानका ऐसा अहङ्कार हुआ कि उन्होंने भगवान राम और उनके दरबारकी मूर्तियां बिना अस्त्र-शस्त्रोंके स्थापित करवा दी हैं।

जी हां ! यह सत्य है और इस कुकृत्यका कुछ धर्मनिष्ठ हिन्दू सामाजिक प्रसार माध्यमोंपर तीव्रतासे विरोध भी कर रहे हैं।

गुजरातके, भावनगर जनपदके तलगाजरडा महुआ ग्राममें यह मन्दिर मुरारीदास हरियानी उपाख्य मोरारी बापूने बनवाया है । मन्दिर सामान्यतः किसी भक्तको भगवानके प्रति भावजाग्रति तथा मन्दिरसे उसे सात्त्विक ऊर्जाकी प्राप्ति हो, जैसे अनेक आध्यात्मिक उद्देश्योंको दृष्टिगत रखकर बनाया जाता है और उसमें स्थापित देवताओं अथवा भगवानकी मूर्तियां भी मूर्तिविज्ञानके अनुसार, शास्त्रोक्त रीतिसे ही बनाई जाती हैं एवं प्राण प्रतिष्ठित की जाती हैं; परन्तु जिस मन्दिरकी चर्चा यहां की जा रही है, वह विवादका कारण बनता जा रहा है; क्योंकि इस मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमानजीमेंसे किसीके भी हाथमें कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं है । न श्रीरामके हाथमें धनुष-बाण हैं और न ही हनुमानजीके हाथोंमें गदा ! इतना ही नहीं, उनके शरीरपर जनेऊ भी नहीं है । ऐसा करनेके पीछे क्या कारण है ?, यह अभीतक स्पष्ट नहीं है।

संसारमें धनुषके बिना भगवान श्रीरामकी मूर्तिवाला यह एकमात्र मन्दिर है। यद्यपि एक-दो अपवाद हैं, जहां बिना धनुष-बाणके रामजीके मन्दिर बने हैं; परन्तु वे किसी पौराणिक महत्त्वके कारण हैं, जैसे ओरछाका राजा राम मन्दिर और नासिकका काले रामजी का मन्दिर। गीतामें भगवान श्रीकृष्णने कहा है, "मैं शस्त्रधारियोंमें राम हूं" अर्थात शस्त्रके बिना रामकी कल्पना नहीं की जा सकती; परन्तु इस कलयुगमें कुछ शब्दज्ञानी, धर्मसंस्थापक भगवान श्रीकृष्णसे भी अधिक ज्ञानी हो गए हैं और बिना अस्त्र-शस्त्रके भगवान श्रीरामकी मूर्ति स्थापित करवाकर उन्होंने भगवान श्रीकृष्णके तत्त्वज्ञानको भी जैसे चुनौती दे दी है।

आज प्रायः ऐसा कोई हिन्दू नहीं जिसने किसी न किसी रूपमें रामायण न सुनी हो और उसी रामायणके अनुसार लक्ष्मणने रामकी सुरक्षाका प्रण लिया था और कहा था कि जब भी आप पूजा या ध्यानमें लीन रहेंगे, तब मैं वहां धनुष लेकर आपकी सुरक्षा करूंगा; अतः धनुष लक्ष्मणजीके व्यक्तित्वका अभिन्न अङ्ग है, जिसे उनसे पृथक नहीं किया जा सकता; परन्तु लक्ष्मणजी भी यहां निःशस्त्र हैं। इसी प्रकार हनुमानजीके हाथसे गदा लुप्त है। माता सीताके गलेमें उनका मङ्गलसूत्र या अन्य कोई आभूषण भी नहीं है, जबकि रावणद्वारा अपहरणकर लङ्का ले जाते समय, उन्होंने अपने आभूषण निकालकर, प्रभु श्रीरामको अपने चिह्नप्रमाण स्वरूप आकाशसे नीचे गिराए थे, यह सर्वविदित है।

इस शस्त्रविहीन राममूर्तिकी जानकारी हमें उन कथावाचकके जिस जालस्थलसे (वेबसाइटसे) मिली है, उसी जालस्थलपर प्रकाशित चित्रोंमें, उन्हें अनेक हिन्दू विरोधियोंके साथ मन्त्रणा करते दिखाया गया है । जैसे सैम पित्रोदा, रवीश कुमार आदि, अब इसके पीछे उनका कौनसा हिन्दूहित है या रामहित है ?, ये वही जानें; किन्तु

प्रश्न उठता है कि यह मात्र एक चूक है अथवा कोई षड्यन्त्र है ? इसपर सन्त समाज तथा धर्मनिष्ठ हिन्दुओंके साथ ही, उनके अनुयायियोंको भी चिन्तन तथा मन्थन अवश्य करना चाहिए ! आश्चर्य इस बातका भी है कि कुछ धर्मनिष्ठ हिन्दू इस विषयपर अपने स्वर मुखरित कर रहे हैं; किन्तु अखिल भारतीय अखाडा परिषद, अनेक हिन्दू सङ्गठन, विभिन्न बडे-बडे मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, आचार्य महामण्डलेश्वर, करोडों सदस्योंवाले कर्मकाण्डी परिवार, अनेक विद्वतजनसे शोभित ब्राह्मण परिषदें, अनेक वेदज्ञ आदिके सङ्गठन इस विषयपर अभीतक मौन क्यों हैं ? इस धर्म विडम्बनापर चर्चा हेतु कोई धर्म संसद क्यों नहीं आयोजित की जाती है ? इस सम्बन्धमें आजकी परिस्थितियोंमें, परस्पर मिलनेकी भी आवश्यकता नहीं है। सुलभ आधुनिक सञ्चार साधनोंके कारण यह कार्य सरलतासे हो सकता है ? क्या शास्त्रोंसे छेडछाडके इस रोगके महामारी बननेकी प्रतीक्षा की जा रही है ? ऐसे प्रश्नोंके उत्तर आज हिन्दू समाज जानना चाहता है ?

प्रेरक प्रसंग

११ जूनको स्वामी विवेकानन्दकी पुण्य तिथि है, इसी सन्दर्भमें देखते हैं उनके जीवनसे सम्बन्धित कुछ प्रसंग :

साहस मृत्युको भी कर सकता है पराजित

एक पाश्चात्य (अंग्रेज) मित्र तथा कु. मूलरके साथ स्वामीजी किसी समतल क्षेत्रमें टहल रहे थे। उसी समय एक उन्मत्त साण्ड द्रुतगतिसे उनकी ओर बढने लगा। अङ्गरेज सज्जन भागकर पहाडीके दूसरे छोरपर जा खडे हो गए। कु. मूलर भी जितना हो सका, दौडी और घबराकर गिर पडी। स्वामीजीने उन्हें सहायता पहुंचानेका कोई और उपाय न देखकर, स्वयं उस वृषके (साण्डके) सम्मुख खडे हो गए और सोचने लगे, "चलो,अन्त आ ही पहुंचा।" तत्पश्चात उन्होंने बताया था कि उस समय उनका मन आकलन करनेमें लगा हुआ था कि साण्ड उन्हें कितनी दूर फेंकेगा ? किन्तु कुछ समयके पश्चात वह ठहर गया और पीछे हटने लगा। अपने कायरतापूर्ण पलायनपर वे अंग्रेज बहुत लज्जित हुए। कु. मूलरने पूछा कि वे ऐसी संकटमयी स्थितिसे सामना करनेका साहस कैसे जुटा सके ? स्वामीजीने पत्थरके दो खण्ड (टुकडे) उठाकर, उन्हें आपसमें टकराते हुए कहा कि संकट और मृत्युके समक्ष मैं स्वयंको चकमक पत्थरके समान सबल अनुभव करता हूं; क्योंकि मैंने ईश्वरके चरण स्पर्श किए हैं।

* स्वामी विवेकानन्द एक दिन कक्षामें मित्रोंको वृत्तान्त सुना रहे थे। सभी इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कब अध्यापकजी कक्षामें आए और पढाना आरम्भ कर दिया। अध्यापकजीको कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी। "कौन बात कर रहा है ?" उन्होंने पूछा। सभीने स्वामीजी और उनके साथ बैठे छात्रोंकी ओर संकेतकर दिया। अध्यापकजीने तुरन्त उन छात्रोंको बुलाया और पाठसे सम्बन्धित एक प्रश्न पूछने लगे। जब कोई उत्तर न दे सका तो शिक्षकने स्वामीजीसे भी वही प्रश्न किया।

उन्होंने उत्तर दे दिया। अब शिक्षकको विश्वासहो गया कि स्वामीजी पाठपर ध्यान दे रहे थे और शेष छात्र वार्तालापमें लगे हुए थे। उन्होंने स्वामीजीको छोडकर, शेष सभीको चौकीपर खडे होनेका दण्ड दिया। सभी छात्र चौकीपर खडे होने लगे, स्वामीजीने भी यही किया। तब अध्यापकजी स्वामीजीसे बोले, "तुम बैठ जाओ !" स्वामीजीने कहा, "नहीं, महोदय ! मुझे भी खडा होना होगा; क्योंकि मैं ही इन छात्रोंसे वार्तालापकर रहा था।" सभी उनके सच बोलनेके साहसको देख बहुत प्रभावित हुए।

भारत-नेपाल सङ्कट और हमारी भूमिका

सहस्रों वर्षसे सांस्कृतिक भारतका अखण्ड भाग रहे और वर्तमानमें भी भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, वैचारिक और आध्यात्मिक रूपसे भारतके अत्यन्त निकट, नेपालके व्यवहारमें अनायास कटुता आना, न केवल राजनेताओंके लिए; अपितु दोनों देशोंकी जनताके लिए भी घोर चिन्ताका विषय है। आजसे पूर्व नेपालने कभी भारतके प्रति इस प्रकारकी कटु प्रतिक्रिया नहीं दी थी। उसकी ओरसे मात्र कैलाश मानसरोवर यात्राको सुगम बनानेके लिए लिपुलेखके पास भारतद्वारा किए जा रहे मार्ग निर्माणपर, पूर्वमें कभी आपत्ति नहीं ली गई थी; परन्तु अब वह भारतीय क्षेत्रोंको अपना बता रहा है ! ज्ञातव्य है कि नेपाल शासनने देशका एक नूतन विवादित मानचित्र प्रकाशित किया, जिसमें लिपुलेख, कालापानी, लिंपियाधुराके भारतीय क्षेत्रोंको अपना बताया गया है, जिसे भारत शासनने आधिकारिक रूपसे अमान्य कर दिया। यह तथ्य किसीसे छुपा नहीं है कि वर्तमान नेपालका वामपन्थी शासन, यह दुष्कृत्य चीनके सङ्केतपर कर रहा है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि नेपालसे लगे भारतीय सीमाके कुछ क्षेत्रोंमें, वामपन्थियोंद्वारा पथभ्रष्ट किए गए, कुछ लोगोंने नेपाल मूलके नागरिकोंका विरोध प्रारम्भकर, स्थितिको विकृत करनेका प्रयास किया।

यद्यपि नेपालने नवीन घटनाक्रमके अन्तर्गत परिवर्तित मानचित्रको स्थगित कर दिया था और इसे अपनी संसदमें प्रस्तुत नहीं किया था; परन्तु चीनके दबावमें नेपालने पुनः नवीन मानचित्र संसदके अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया । वहीं नेपाली सेनाके सेनाध्यक्षने भी नेपालके प्रधानमन्त्री के. पी. ओलीके परामर्शको अस्वीकृत करते हुए भारतके विरुद्ध वक्तव्य नहीं दिया। समाचारोंके अनुसार नेपालके सेना प्रमुख जनरल पूर्णचन्द्र थापाको, भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवानेके उनके नेपालपर दिए गए वक्तव्यका विरोध करनेको कहा; परन्तु जनरल थापाने मना कर दिया। वामपन्थी ओली चाहते थे कि किसी प्रकार इस प्रकरणको बढाकर दोनों सेनाओंमें मतभेद उत्पन्न किया जा सके; परन्तु जनरल थापाने उनके मन्तव्यपर पानी फेरते हुए तथा इस विवादको राजनीतिक बताते हुए किसी भी प्रकारका वक्तव्य देनेसे मना कर दिया।

वहीं नेपालकी जनताद्वारा इस प्रकरणमें अपने ही प्रधानमन्त्री ओलीको अपशब्द कहते हुए, भारतसे विवाद करनेपर उनके विरुद्ध अनेक स्थानोंपर प्रदर्शन भी किया गया था ।

वस्तुतः भारतकी अधिकांश समस्याओंकी भांति ही इस समस्याके मूलमें भारतके पूर्व प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू और उनकी सन्तानें ही उत्तरदायी रही हैं । वर्ष १९५२ में नेपालके तत्कालीन राजा त्रिभुवन विक्रम शाहने नेपालके भारतमें विलयका प्रस्ताव नेहरूके सामने रखा; परन्तु प्रधानमन्त्री नेहरूने यह कहकर उनकी बात टाल दी कि इस विलयसे दोनों देशोंको लाभके स्थानपर हानि अधिक होगी। यही नहीं, इससे नेपालका पर्यटन भी समाप्त हो जाएगा। जबकि इसका मूल कारण यह था कि नेपाल जम्मू-कश्मीरकी भांति अपने विशेष अधिकारके अन्तर्गत अपने हिन्दू राष्ट्रके अभिज्ञानको (पहचानको) बनाए रखना चाहता था, जो हिन्दू द्वेषी नेहरूको स्वीकार नहीं था और इस कारण भारतकी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रणनीतिक पराजय हुई, जिसकी क्षतिपूर्ति आजतक नहीं हो पाई है।

वर्ष १९८९ में राजीव गांधीकी काठमांडू यात्राके समय सोनिया गांधी उनके साथ थीं। यह यात्रा भारत-नेपाल सम्बन्ध सुधारनेकी दिशामें एक योग्य प्रयास था; किन्तु राजीव गांधीके अहंकार तथा अदूरदर्शिताके कारण दोनों देशोंके सम्बन्ध अधिक विकृत हो गए। उस समय नेपाल विश्वका एकमात्र हिन्दू राजतन्त्रवाला देश था। राजीव गांधीद्वारा नेपालमें स्थित पौराणिक,

धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पशुपतिनाथ मन्दिर जानेके निर्णयतक, राजीव और राजा बीरेन्द्रके मध्य सब कुछ सम्यक चल रहा था; परन्तु तिरुपति बालाजी और जगन्नाथ पुरीके मन्दिरोंकी भांति ही पशुपतिनाथ मन्दिरमें भी अहिन्दुओंके जानेपर प्रतिबन्ध है और राजीवने सोनियाको साथ ले जानेका हठ किया; किन्तु पशुपतिनाथ मन्दिरके पुजारी उन्हें कोई छूट देने हेतु सज्ज (तैयार) नहीं हुए। राजा बीरेन्द्रने भी पुजारियोंको किसी प्रकारका आदेश देनेमें अपनी असमर्थता व्यक्त की। ऐसा कहा जाता है कि राजा बीरेन्द्रकी पत्नी रानी ऐश्वर्या पशुपतिनाथ मन्दिरके न्यासके कार्योंमें अतिशय रुचि लेती थीं और रानी ऐश्वर्याने ही सोनिया गांधीको मन्दिरमें न जाने देनेको लेकर कठोरता प्रदर्शित की थी, जो उनके स्तरपर न केवल उनका अधिकार था; अपितु यह योग्य आचरण भी था। माना जाता है कि राजीवने इस घटनाको अपने अनादरके रूपमें लिया। उन्हें लगा कि राजा बीरेन्द्रने उन्हें अपमानित किया है और वे पशुपतिनाथ मन्दिरसे बिना पूजा किए ही लौट गए ।

राजीवकी इस यात्राके पश्चात दोनों देशोंके सम्बन्ध सुधरनेके स्थानपर अधिक बिगड गए । राजीव गांधीद्वारा शासित भारत शासनने नेपालको आर्थिक रूपसे प्रतिबन्धित कर दिया और इसका नेपालपर अत्यन्त कुप्रभाव पडा। वहां भारत विरोधी भावनाएं भडकने लगीं और राजा बीरेन्द्रपर राजतन्त्र विरोधी शक्तियोंका दबाव बढने लगा।

नेपालके नागरिक तन, मन, धनसे भारतका समर्थन करते हैं; परन्तु चीनने षड्यन्त्रपूर्वक भारत समर्थक राजतन्त्रको समाप्त करवाकर, वहां वामपन्थी राज स्थापितकर नेपालके संसाधनोंपर अनधिकार करनेका प्रयास किया। यह प्रक्रिया सतत चलती रही और जब राजतन्त्र समाप्त हो रहा था, तब वहांके राजाने भारतसे समर्थन व सहयोग मांगा था; परन्तु तब यहां मनमोहन सिंहके नेतृत्वमें चीनका समर्थन प्राप्त कांग्रेसका शासन था; इसलिए नेपालका समर्थन न कर वे घोषित हिन्दू राष्ट्रको मूकदर्शक बन समाप्त होते देखते रहे ! इस राजनीतिक मूर्खताके कारण, भारतको राजनीतिकरूपसे जो वैश्विक क्षति हुई, उसका क्षोभ प्रायः उन सभी भारतवासियोंको है, जो वामपन्थी विचारधारासे मुक्त हैं।

त्रेतामें अवतरित भगवान विष्णुके अवतार भगवान 'राम' इस राष्ट्रके प्राण हैं और उनकी प्राणप्रिया माता जानकी मिथिलाञ्चलसे (नेपाल) ही थीं । आज भी प्रत्येक चौथे वर्ष अयोध्यासे रामजीकी वरयात्रा (बारात) नेपाल जाती है और वहां इसका भव्य तथा आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया जाता है। भगवान शिवके पशुपतिनाथ स्वरूपके दर्शन, मानसरोवर या कैलाश पर्वतके दर्शनकी कल्पनामें नेपाल सहज ही जुड जाता है । भारतकी सेना जब विकट युद्ध करती है, तब भारतीय सैनिकोंके साथ "जय महाकाली, आयो गुरखाली" और "कायरतासे मरना अच्छा" जैसे घोषवाक्यों से आकाश गूंजाते गोरखा सैनिकोंके शौर्य और निष्ठापर सन्देह कैसे किया जा सकता है ? जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि यह प्रकरण मात्र राजनीतिक है और चीनको भारतद्वारा कडा उत्तर देनेपर इसका स्वतः पटाक्षेप हो जाएगा; तथापि हमें इस प्रकरणपर अधिक सतर्क रहना होगा। हमें अपने नेपाली बन्धुओंसे इस समय सौम्य और स्नेहपूर्ण व्यवहार ही करना चाहिए ! वामपन्थियोंके कुचक्रसे बचते हुए, उन नेपालवासियोंको, विशेष रूपसे, हिन्दुओंको, अपनेसे पृथक न मानें ! वे मात्र प्रशासनिक व्यवस्थामें हमसे भिन्न हैं; परन्तु हमारी संस्कृति अभिन्न है। सांस्कृतिक रूपसे अभिन्न, भारतीयों और नेपालियोंको वर्तमान चीनी-वामपन्थी षड्यन्त्रका प्रत्युत्तर अपनी सामंजस्यतासे ही देना होगा। **- दिनेश दवे**

卐卐卐卐卐

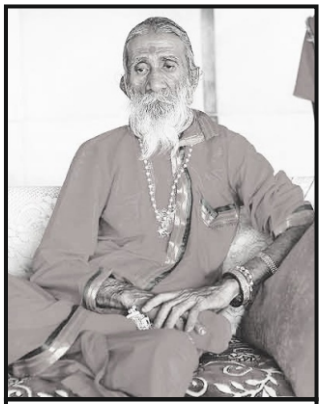
सन्त प्रह्लाद जानी

सन्त प्रह्लाद जानीका देह त्याग

वैज्ञानिक प्रगतिको ही सत्य माननेवाले बुद्धिवादी व्यक्तियोंके समक्ष सन्त प्रह्लाद जानीने अपने जीवनके माध्यमसे, एक ऐसा दृष्टान्त रखा है कि इसके आगे उन्हें भी नतमस्तक होना पडा। प्रायः ७६ वर्षोंसे अन्न-जल त्यागकर एक तपस्वीका जीवन व्यतीत कर रहे सन्त प्रह्लाद जानी उपाख्य 'चुनरीवाले माताजी'का अपने गांव चराडामें देह त्याग हो गया। उनका मूल नाम प्रह्लाद जानी था । कई दशकोंसे अन्न-जल त्यागकर वे विज्ञान जगतके लिए भी एक चुनौती बन गए थे। गुजरातके गांधीनगर जनपदके, माणसा उपखण्डका चराडा गांव उनका पैतृक निवास था; परन्तु कई दशकोंसे अंबाजी ही उनकी साधनाका केन्द्र रहा।

पालनपुरमें अंबा माताजी मन्दिरके पास गब्बर पर्वतपर आश्रम बनाकर पिछले कई वर्षोंसे रह रहे चुनरीवाले माताजीने ८८ वर्षकी आयुमें २५ मई २०२० की रात्रि २ बजे अन्तिम सांस ली। प्रह्लाद जानी ११ वर्षकी उम्रसे ही साधनामें लीन थे । योग, प्राणायामसे प्राप्त ऊर्जाशक्तिसे वे बिना कुछ खाए-पिए विगत ७६ वर्षसे जीवित रहकर विज्ञान जगतको भी चुनौती दे रहे थे। उनके देह त्याग पश्चात उनके पार्थिव देहको समाधि दी गई।

लाल वस्त्र, नाकमें नथनी, हाथोंमें कंगन ही चुनरीवाले माताजीका अभिज्ञान (पहचान) बन चुका था। एक २० से २५ सदस्योंवाले बडे संयुक्त परिवारके मुखिया प्रह्लाद जानी बचपनसे अध्यात्ममें रुचि रखते थे और युवा होनेसे पहले ही सांसारिक मोह मायासे दूर रहते हुए, उन्होंने गुजरातके अंबाजीमें गब्बर पर्वतपर अपनी साधनाका एक केन्द्र बना लिया था। कर्णावती (अहमदाबाद) तथा मुम्बईके कई प्रसिद्ध चिकित्सालयोंमें उनके निरन्तर ७६ वर्षोंसे अन्न व जल त्यागकर जीवित रहनेपर, कई शोध किए गए; परन्तु विज्ञान उनकी ऊर्जाका स्रोत नहीं जान सका। यद्यपि उन्होंने अपने किसी साक्षात्कारमें बताया था कि उन्हें ऊर्जा सूर्यकिरणोंसे प्राप्त होती है; परन्तु बुद्धिवादी विज्ञान ऐसी बातोंपर बिना प्रमाण विश्वास कहां करता है ? और चुनरीवाले माताजीका अन्न-जल बिना जीवित रहना इसी विज्ञानके लिए एक रहस्य बनकर रह गया ! वस्तुत: अध्यात्म और अलौकिक शक्तियोंका शोध कर पानेकी क्षमता आधुनिक शिवत्वहीन विज्ञानमें नहीं है; तथापि विज्ञानके माध्यमसे बुद्धिजीवियोंने अनेक असफल प्रयास इस पहेलीको सुलझानेके लिए किए, जिसमें रक्षा अनुसन्धान एवं विकास सङ्गठनके आनुषाङ्गिक संस्थान, कार्यकी और सम्बद्ध विज्ञान रक्षा संस्थानने (DIPAS) दो बार सन्त प्रह्लाद जानीके इस कथनका वैज्ञानिक परीक्षण किया कि उन्होंने पिछले ७ दशकोंसे अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है।

ये परीक्षण प्रथम बार २००३ में और पुनः २०१० में किए गए। २०१० में उपर्युक्त दोनों संस्थानोंके साथ ही अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) जैसे संस्थानोंके चिकित्सक, वैज्ञानिक तथा शोधकर्ताओंने अहमदाबादके स्टर्लिंग चिकित्सालयके एक काञ्चके (शीशेके) कक्षमें पूरे १५ दिनतक उनपर सतत दृष्टि रखी। कुल ४० चिकित्सकोंके समूहने दिनके २४ घण्टे 'CCTV कैमरों'की सहायतासे उनपर दृष्टि रखी तथा समय-समयपर उनका चिकित्सकीय दृष्टिसे शारीरिक परीक्षण भी करते रहे। जैसे शरीरका तापमान, रक्तचाप, हृदयगति, रक्त शर्कराकी मात्रा आदि अनेक स्वास्थ्य परीक्षण किए गए और इस मध्य उनके शौचालय जाने, मल-मूत्र विसर्जन इत्यादिपर भी तीक्ष्ण दृष्टि रखी गई।

वैज्ञानिकोंने पाया कि उन पन्द्रह दिनोंमें सन्त प्रह्लाद जानीने एक बून्द भी जल या अन्न ग्रहण नहीं किया। २४ घण्टेमें वे मध्यमानके अनुसार मात्र १०० मिलीलीटर मूत्रका ही त्याग करते थे तथा मलत्याग तो उन्होंने एक बार भी नहीं किया ! ऐसे अनेक शोधोंके उपरान्त वैज्ञानिकोंने यही निष्कर्ष निकाला कि सन्त प्रह्लाद जानी किसी अज्ञात रहस्यमयी प्राणशक्तिसे ही ऊर्जा ग्रहण करते हैं।

रक्षा अनुसन्धान एवं विकास सङ्गठन, कार्यकी और सम्बद्ध विज्ञान रक्षा संस्थान तथा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जैसी संस्थाएं इन शोधोंके आधारपर यह जानना चाहती थीं कि भारतीय सेनाके लिए विकट परिस्थितियोंमें, जैसे मरुस्थल या हिमशिखरोंपर हमारे सैनिक बिना कुछ खाए-पिए भी न केवल जीवित रह पाएं; अपितु वीरतासे युद्ध भी कर सकें और वे नियमित ऐसे शोध करती रहती हैं। अन्ततः 'DIPAS' जैसे प्रतिष्ठित संस्थानने भी सन्त प्रह्लाद जानीके इस प्रतिवादको सत्य माना कि उन्होंने दीर्घावधिसे अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है।

ऐसेमें हमारे प्राचीन ग्रन्थोंमें समाधिकी जिस अवस्थाका उल्लेख आता है, जिसमें योगी मात्र योग, प्राणायाम और प्राणवायुके सहारे ही वर्षों समाधिमें बिता देते थे, इसीका जीवन्त उदाहरण थे योगी सन्त प्रह्लाद जानी।

सम्भवतः देशको उनका यह सन्देश था कि यदि पुनः विश्व गुरु बनना है तो विज्ञानके साथ-साथ अध्यात्मको भी उतना ही महत्त्व देना होगा। यदि उनका यह सन्देश शासन और वैज्ञानिकोंने आत्मसात कर लिया तो उनकी ओरसे सन्त चरणोंमें यही खरी श्रद्धाञ्जलि होगी।

सतयुगमें मनुष्य इसी प्रकार बिना अन्न-जल ग्रहण किए सहस्र वर्षोंतक तप किया करता था, यह हम सभीने पढा और सुना है; परन्तु कलियुगमें ऐसाकर सन्त प्रह्लाद जानीने सतयुगके सभी आख्यानोंकी पुष्टि कर दी है। ऐसे महान सन्तके चरणोंमें वैदिक उपासना पीठकी ओरसे भावपूर्ण शत-शत नमन !

मिशनरियां कर रहीं मूक पशुओंका धर्मान्तरण

ईसाई मिशनरियां भारतमें अनेक वर्षोंसे धन व भूमि आदिका लालच देकर धर्मान्तरणमें संलग्न हैं, यह हम सभी जानते ही हैं। अब मिशनरियां धर्मपरिवर्तन करते-करते इतनी पतित हो गई हैं कि अब वे मूक पशुओंका भी धर्मपरिवर्तन करने लगी हैं ! इसी क्रममें केरलमें सेंट जॉर्ज फोरोन कैथोलिक गिरिजाघरके पादरीने एक हाथीका धर्मपरिवर्तन किया है ! जी हां, उचित पढा, पादरीने महादेवन नामक हाथीका धर्मपरिवर्तन करवाया है। पादरीने कथित पवित्र जल छिडककर हाथीका धर्मपरिवर्तन किया। इसका चित्र सामाजिक जालस्थलपर प्रसारित हुआ तथा हिन्दुओंद्वारा इसका विरोध किया गया, तब पादरीने स्पष्टीकरण दिया कि उसने धर्मपरिवर्तन नहीं किया, वरन यह एक प्रकारसे आशीर्वाद देनेकी प्रक्रिया है, जबकि प्रत्यक्षदर्शियोंने इसे धर्मपरिवर्तन ही बताया !

वस्तुतः यह धर्मपरिवर्तन हो या पादरीके अनुसार आशीर्वादकी प्रक्रिया, दोनों ही प्रकरणमें यह हिन्दू धर्मकी विडम्बना है; क्योंकि हाथीको हिन्दू धर्ममें पूजनीय माना गया है और हिन्दू उनसे स्वयं आशीर्वाद लेते हैं, न कि देते हैं ! हिन्दुओंको अब शीघ्रातिशीघ्र अपने नेत्रोंको खोलना होगा और पादरियोंको ऐसे कुकर्म करनेसे रोकना होगा एवं मिशनरियोंको भारतसे बाहर करना होगा तथा इसके लिए सङ्गठित होना ही एकमात्र माध्यम है; अतः हिन्दुओ, सङ्गठित हों व धर्मपरिवर्तनके विरुद्ध अपने स्वर मुखर करें !

देह विज्ञान (नाभि)

नाभि प्रकृतिकी एक अद्भुत देन है

एक ६२ वर्षके वृद्धको अकस्मात बाईं आंखसे कम दिखने लगा । विशेषकर रात्रिको दृष्टि न के समान होने लगी । जांच करनेसे यह निष्कर्ष निकला कि उनकी आंखे ठीक हैं; परन्तु बाईं आंखकी रक्त नलियां सूख रही हैं । चिकित्सकोंने जांच परीक्षणसे बताया कि अब वे जीवनभर देख नहीं पाएंगे।

हमारा शरीर परमात्माकी अद्भुत देन है। गर्भकी उत्पत्ति नाभिके पीछे होती है और उसको माताके साथ जुडी हुई नाडीसे पोषण मिलता है; इसलिए मृत्युके तीन घण्टे पश्चाततक नाभि उष्ण रहती है।

गर्भधारणके नौ माह पश्चात एक सम्पूर्ण बाल स्वरूप बनता है। नाभिद्वारा सभी नसोंका जुडाव गर्भके साथ होता है; इसलिए नाभि एक अद्भुत भाग है । नाभिके पीछेकी ओर पेचूटी या 'navel button' होता है, जिसमें ७२००० से भी अधिक रक्त धमनियां स्थित होती हैं। यदि सारी धमनियोंको जोडा जाए तो उनकी लम्बाई इतनी होगी कि पृथ्वीके गोलाईपर दो बार लपेट सके।

नाभिमें गायका शुद्ध घी या तेल लगानेसे बहुत सारी शारीरिक दुर्बलताओंका उपाय हो सकता है।

१. आंखोंका शुष्क हो जाना, दृष्टि क्षीण हो जाना, चमकदार त्वचा और बालोंके लिए उपाय

सोनेसे पूर्व ३ से ७ बूंदें शुद्ध घी और नारियलके तेलकी नाभिमें डालें और नाभिके आसपास डेढ 'इंच' गोलाईमें फैला दें!

२. घुटनेकी वेदनामें सोनेसे पहले तीनसे सात बून्द अरण्डीका तेल नाभिमें डालें और उसके आसपास डेढ 'इंच'में फैला दें।

३. शरीरमें कम्पन तथा जोडोंमें वेदना और शुष्क त्वचाके लिए रात्रिको सोनेसे पूर्व तीनसे सात बूंद राई या सरसोंका तेल नाभिमें डालें और उसके चारों ओर डेढ 'इंच'में फैला दें!

४. मुंह और गालपर होनेवाले मुहांसोंके लिए नीमका तेल तीनसे सात बून्द नाभिमें उपरोक्त ढंगसे डालें

नाभिमें तेल डालनेका कारण

हमारी नाभिको पता रहता है कि हमारी कौनसी रक्तवाहिनी सूख रही है; इसलिए वह उसी धमनीमें तेलका प्रवाहकर देती है।

जब बालक छोटा होता है और उसका पेट दुखता है तब हम हींग और जल या तेलका मिश्रण उसके पेट और नाभिके आसपास लगाते थे और उसकी पीडा तुरन्त दूर हो जाती थी। बस यही कार्य है तेलका!

घी और तेल नाभिमें डालते समय 'ड्रॉपर'का प्रयोग करें, जिससे उसे डालनेमें सुविधा रहे। - योगाचार्य, हरीश भाई वैद्य, बडौदा

卐卐卐卐卐

उपासनाके माध्यमसे संस्कृत सीखें !

यदि आप संस्कृत सीखने हेतु इच्छुक हैं; किन्तु आपको आस-पास कहीं जाकर इसे सीखनेका समय नहीं मिल रहा है तो आप घर बैठे इस दैवी भाषाको सीख सकते हैं! इस हेतु उपासनाकी ओरसे साप्ताहिक संस्कृत शिक्षण वर्ग आरम्भ किया गया है! संस्कृत भाषामें धर्म, अध्यात्म और संस्कृति सम्बन्धी अनन्त ज्ञान है; अतः सभी हिन्दुओंको इसे अवश्य सीखना चाहिए अथवा अगली पीढीको अवश्य ही सीखाएं; क्योंकि आगामी सनातन धर्मराज्यमें इसीका अत्यधिक महत्त्व होगा ! जो भी इस भाषाको सीखना चाहते हैं, वे हमें ८६००६०८१०९ (8600608109) इस सम्पर्क क्रमांकपर सूचना दें !

कटे कन्दकी (प्याजकी) हानियां

मानें या न मानें; परन्तु यह पूर्णतः सत्य है कि पहलेसे कटे 'प्याज'का कभी उपयोग नहीं करना चाहिए। 'प्याज' सदैव तुरन्त काटकर खाएं ! कटा 'प्याज' दस मिनिटमें अपने आसपासके सारे कीटाणु अवशोषित कर लेता है। यह वैज्ञानिक रूपसे सिद्ध हो चुका है। जब भी किसी ऋतुनुसार रोगका प्रकोप फैले, घरमें सवेरे-संध्या प्रत्येक कक्षमें 'प्याज' काटकर रख दें ! कालान्तरमें उसे फेंक दें ! इससे आप सुरक्षित बने रह सकते हैं।

'प्याज'के सम्बन्धमें महत्त्वपूर्ण जानकारी :

ख्रिस्ताब्द १९१९ में 'फ्लू'से चार कोटि लोग मारे जा चुके थे, तब एक चिकित्सक कई किसानोंसे उनके घर इस आशामें मिला कि वह कैसे इन किसानोंको इस महामारीसे लडनेमें सहायताकर सकता है। बहुत सारे किसान इस 'फ्लू'से ग्रसित थे और उनमेंसे बहुतसे मारे जा चुके थे। चिकित्सक जब इनमेंसे एक किसानके सम्पर्कमें आया तो उसे ये जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि सारे गांवके 'फ्लू'से ग्रसित होनेके पश्चात भी यह किसान परिवार पूर्णतः स्वस्थ था। तब चिकित्सकको ये जाननेकी इच्छा जागी कि इस किसानके परिजनने सारे गांवसे हटकर ऐसा क्या किया कि वह इस भयङ्कर महामारीमें भी स्वस्थ थे। तब किसानकी पत्नीने उन्हें बताया कि उसने अपने घरके दोनों कक्षोंमें एक थालीमें छिले हुए 'प्याज' रख दिए थे। तब चिकित्सकने थालीमें रखे इन 'प्याज'को सूक्ष्मदर्शीसे देखा तो उसे इस 'प्याज'में उस घातक 'फ्लू'के जीवाणु मिले, जो सम्भवतः इस 'प्याज'द्वारा अवशोषित कर लिए गए थे और कदाचित यही कारण था कि इतनी बडी महामारीमें भी ये परिवार पूर्णतः स्वस्थ था; क्योंकि 'फ्लू'के विषाणु इन 'प्याज'द्वारा सोख लिए गए थे। मेरे एक मित्र अमेरिकामें रहते थे और मुझे सदैव स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयोंपर अत्यधिक ज्ञानवर्धक जानकारी भेजते रहते थे, इसी क्रममें मैंने उनसे चर्चा की, तब उन्होंने 'प्याज'के सम्बन्धमें बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी मुझे भेजी, उनका इस अत्यधिक रोचक जानकारीके लिए धन्यवाद !

जब मैं 'न्यूमोनिया'से ग्रसित था और कहनेकी आवश्यकता नहीं थी कि मैं अत्यन्त दुर्बल अनुभव कर रहा था तब मैंने एक लेख पढा था जिसमें ये बताया गया था कि 'प्याज'को मध्यसे काटकर रात्रिमें 'न्यूमोनिया'से ग्रस्त रोगीके कक्षमें एक पात्रमें रख दिया गया था और सवेरे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि 'प्याज' कीटाणुओंके कारण पूर्णतः काला हो गया था। तब मैंने भी अपने कक्षमें वैसा ही किया और देखा कि अगले दिवस 'प्याज' पूर्णतः काला होकर दूषित हो चुका था और मैं बहुत स्वस्थ अनुभव कर रहा था।

'प्याज' जीवाणुओंको अवशोषित कर लेते हैं, यही कारण है कि अपने इस गुणके कारण 'प्याज' हमें ठण्ड और 'फ्लू'से बचाते हैं; अतः वह 'प्याज' नहीं खाना चाहिए, जो बहुत समय पहले काटा गया हो और थालीमें रखा गया हो। ये जान लें कि काटकर रखा गया 'प्याज' अत्यन्त विषाक्त होता है।

जब कभी भी विषाक्त भोजनके (फूड पॉइजनिङ्गके) प्रकरण चिकित्सालयमें आते हैं तो सबसे पहले इस बातकी जानकारी ली जाती है कि रोगीने अन्तिम बार 'प्याज' कब खाया था और वे 'प्याज' कहांसे आए थे ?,

यहांतक कि किसी बन्द थैलीमें इसे प्रशीतकमें (रेफ्रिजरेटरमें) रखना भी सुरक्षित नहीं है। यदि आप कटे हुए 'प्याज'को शाक (सब्जी) बनानेके लिए उपयोग कर रहें हो, तब तो ये ठीक है; परन्तु यदि आप कटा हुआ 'प्याज' अपनी 'ब्रेड'पर रखकर खा रहें हैं तो ये सुरक्षित नहीं है। ऐसी स्थितिमें आप समस्याको आमन्त्रण दे रहें हैं। स्मरण रखें, कटे हुए 'प्याज' और कटे हुए आलूकी नमी जीवाणुओंको तीव्रतासे पनपनेमें सहायक होती है।

कुत्तोंको कभी भी 'प्याज' नहीं खिलाना चाहिए; क्योंकि 'प्याज'को उनके पेटका चयापचय (मेटाबोलिज्म) कभी भी नहीं पचाता।

कृपया ध्यान रखें कि 'प्याज'को काटकर अगले दिवस शाक बनानेके लिए नहीं रखना चाहिए। यहांतक कि कटे हुए 'प्याज' एक रात्रिमें बहुत विषाक्त हो जाते हैं; क्योंकि ये दूषित जीवाणु बनाते हैं, जो उदरको रोगग्रस्त करनेके लिए पर्याप्त है।

इन्दौरके आयुर्वेदाचार्य श्री. प्रेम जोशीद्वारा पर्यावरण दिवसपर एक विशेष उपक्रम

प्रिय मित्रो ! पर्यावरण दिवस मनाकर इतिश्री नहीं कर लेना है। आपको वर्षमें प्रत्येक माह एक दिन देना है और एक वर्षमें न्यूनतम ५१ वृक्ष सिद्ध (तैयार) करने हैं। अभी जून माहमें मात्र एक दिन देना है, बीज सङ्ग्रहके लिए। किस वृक्षके बीजको किस प्रकार सङ्ग्रह करना है ?, आइए जानते हैं :

नीमके बीजके लिए : नीमके बीजके लिए नीमके वृक्षके नीचेसे एक किलो निम्बोली एकत्र कर लें ! उसे आधा घण्टा गोमूत्रमें डुबोकर सूखने डाल दें !

जङ्गल जलेबी : जङ्गल जलेबीके बीज भी उसके वृक्षके नीचेसे २५० ग्रामतक एकत्र कर सकते हैं और केवल सूखनेके लिए डालना है।

करञ्ज और महुआके बीजके लिए : करञ्ज और महुआके वृक्षके नीचेसे उनकी टोली एकत्र कर सकते हैं, लगभग १-१ किलो और खुलेमें छांवके नीचे सुखाना है।

इमलीके बीजके लिए : उसके वृक्षके नीचेसे बीज मिल जाएंगे। उन्हें भी आधा या एक किलोतक एकत्र कर लेना है और छांवमें ही सुखाना है।

अमरूदके लिए : आधा किलो एकदम पिलपिले अमरूद क्रयकर एक लीटर पानीमें मसलकर रातभर रखें और प्रातः छलनीमें डालकर तीन-चार बार पानीसे धोकर, सुखाकर ५ मिनट गोमूत्रमें रखकर बाहर धूपमें सुखा लें !

आमके लिए : आमकी गुठलियोंको फेंके नहीं, उन्हें अन्य बीजोंकी भांति एकत्रकर रातभर पानीमें रखकर सवेरे पानीमें धोकर, सुखाकर, गोमूत्रमेंसे निकालकर सुखा लें !

खरबूज, तरबूज, पपीता, चीकू, खिरनीके बीज घरमें भी एकत्र कर सकते हैं। रातभर पानीमें रखकर, सवेरे धोकर, सुखाकर, गोमूत्रकी भावना देकर और सुखाकर सङ्ग्रह करें ! कटहलके बीजोंको सडे-गले कटहलसे निकालकर बिना सुखाए ८ घण्टेके भीतर लगाना होता है। बीजोंका सङ्ग्रह काच (शीशा) अथवा मिट्टीके पात्र या कद्दूके (कोहडा, भोपला) खोलमें ही करें ! 'प्लास्टिक', 'टिन' अथवा धातुके बर्तन प्रयोगमें न लाएं ! बेर, आंवला, हरड, बहेडा, कपोक, पीपलके बीज निःशुल्क हमारे यहां उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त और भी अन्य बीज अपने-अपने क्षेत्रमें सुविधानुसार एकत्रित कर सकते हैं। जो मित्र इस अभियानमें भाग लेना चाहते हैं, वे कृपया अपना एक गुट बनाकर अपना या संयोजकको नाम, पता, चलभाष क्रमाङ्क (फोन नम्बर) अवश्य दे दें ! शेष प्रथम मानसून आगमनपर। - प्रेम जोशी

सम्पर्क क्रमांक - ८३१ ९६७ ४९९१ (831 967 4991) ९९७ ७९९ ८८५७ (997 799 8857)

कोरोना महामारीकी आयुर्वेदके माध्यमसे चिकित्सा

'कोरोना' एक कफ है; परन्तु यह एक सूखा कफ है। हमारे चिकित्सक जितनी भी प्रतिजैविक औषधियां (एण्टीबायोटिक दवाईयां) देते हैं, वे कफको सुखानेके लिए देते हैं; किन्तु यह कफ पहलेसे ही सूखा हुआ कफ है, तो इसपर कोई प्रभाव नहीं पडता। इसी कारण इसका उपाय अभीतक नहीं ढूंढा जा सका है; क्योंकि वे अपने दृष्टिकोणसे हटकर नहीं सोच रहे हैं; परन्तु आयुर्वेदमें इसका अत्यन्त सरल व सीधा मूल्याङ्कन है। आयुर्वेदमें कहा गया है कि कफके रोगको काटना सबसे सरल है।

अब मैं इस रोगको काटनेका सूत्र आपको समझाता हूं, जो पूर्णतः वैज्ञानिक है। आयुर्वेदके अनुसार प्रत्येक खाद्य पदार्थके गुण बताए गए हैं। जैसे प्रत्येक खाद्य पदार्थ अपनी प्रकृतिके अनुसार या तो कफनाशक (कफको नष्ट करनेवाला) होता है अथवा कफवर्धक (कफको बढानेवाला) होता है। अब जिसको 'कोरोना' है, उसको एक बन्द कक्षमें सङ्गरोध (क्वारण्टीन) करके, हमें सीधासा यह कार्य करना है कि उसे कफवर्धक खाद्य पदार्थ देना बन्द करना है और अधिकतर कफनाशक पदार्थोंका सेवन कराना है। जब इस वायरसको (विषाणुको) अपने बढनेके लिए खाद्य पदार्थ ही नहीं मिलेगा और जो मिलेगा वह कफको नष्ट करनेवाला होगा तो मैं दृढ निश्चयसे कहता हूं कि पांच दिनोंके भीतर यह नष्ट हो जाएगा और रोगी स्वस्थ हो जाएगा।

अब कफवर्धक पदार्थोंकी सूची देख लीजिए, जो अत्यधिक दीर्घ (लम्बी) है :

१. कोई भी घी, तेल, दूध, लस्सी, पनीर, दही।

२. कन्द (प्याज), आलू, उडदकी दाल, चनेकी दाल, अरवी, शकरकन्द, फूलगोभी, बन्दगोभी, शिमला मिर्च, टमाटर, लहसुन, मशरुम।

३. सन्तरा, सेब, केला, ग्लूकोज (शर्करा),

४. बिस्कुट, गेहूंका आटा, ब्रेड (पाश्चात्य रोटी)।

टिप्पणी : अंग्रेजी चिकित्सक यही चूक कर रहे हैं; क्योंकि वे कफवर्धक पदार्थोंका सेवन रोगीको करा रहे हैं।

कफनाशक पदार्थ निम्नलिखित हैं :

१. अदरक, हलदी, तुलसी, काली मिर्च।

२. शिलाजीत, मुलेठी, आमलकी रसायन (आंवला), काला बांसा।

३. जौकी रोटी, मूंग दाल, लौकी (घीया), तोरई, जीरा, सेंधा लवण (नमक)।

४. मीठा अनार, चीकू, नारियल-पानी।

मैं इसकी पांच चिकित्साएं नीचे लिख रहा हूं, जिनमेंसे प्रत्येक चिकित्सा स्वतः इसके निवारणके लिए पर्याप्त होगी :

१. 'कोरोना'के रोगीको केवल अदरक, हलदी, तुलसी और काली मिर्चका (चूर्णके रूपमें) दूध देते रहें ! यदि दूध देशी गायका हो तो सर्वोत्तम है; उसे कुछ और न दें; दिनमें तीन बार यह देते रहें ! इन सभी औषधियोंको एक पात्र दूधमें मिलाकर उष्ण (गर्म) करके पी सकते हैं। हां, यदि उसकी इच्छा हो तो जल पी सकता है; किन्तु वह जल भी उष्ण (गर्म) होना चाहिए। ५ दिन निरन्तर इस प्रक्रियासे रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगा और 'कोरोना' समाप्त हो जाएगा। इसे ऐसे समझें कि कफका स्रोत, साधन बन्द; फलस्वरुप कफ समाप्त हो जाएगा।

२. रोगीको दिनमें तीन बार दूधके साथ शिलाजीत दें; उसे कुछ और न दें। शिलाजीत अत्यन्त कफनाशक है तो दिनमें तीन समय यह देते रहें ! इसे एक पात्र दूधमें मिलाकर 'गर्म' करके दें ! हां, वह जल पी सकता है; परन्तु वह जल भी उष्ण जल होना चाहिए। ५ दिवस सतत इस प्रक्रियासे रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगा और 'कोरोना' समाप्त हो जाएगा। कफनाशक पदार्थ इस कफजनित रोगको अत्यन्त शीघ्र ठीक करेंगे।

३. एक चम्मच मुलेठीको दूधके साथ दिनमें तीन बार दें, ध्यान रहे कि दूध सदा उष्ण ही होना चाहिए। उसे कुछ और न दें (उष्ण जलके अतिरिक्त) ! एक दिनमें तीन बार यह 'गर्म' दूध एक प्याला (गिलास) देते रहें ! स्मरण रखें कि मुलेठी मधुमेहके रोगीको न दें; क्योंकि यह मीठी होनेसे मधुमेहको बढा देती है।

४. अभ्रक भस्मको (शतपुटी) मधु अथवा दूधकी 'मलाई' या दूधमें मिलाकर तीन समय खाली उदरमें दें ! अभ्रक भस्मकी मात्रा १ ग्रामके लगभग होनी चाहिए। उसके लेनेके दो घण्टेके पश्चात रोगीको एक प्याला (गिलास) 'गर्म' दूध दें एवं ऐसा दिनमें तीन बार करें ! रोगीको और कुछ न दें ! सतत पांच दिनोंतक यही प्रक्रिया चलनी चाहिए। इस प्रक्रियामें रोगी 'गर्म' जल पी सकता है।

५. काला बांसाको जलाकर उसकी राख मधुमें अर्थात शहदमें मिलाकर दें और दो घण्टेके पश्चात गायके 'गर्म' दूधका एक प्याला दें एवं यह दिनमें तीन बार करें; निरन्तर पांच दिनोंतक यही करें !

यद्यपि दूध कफवर्धक है; परन्तु गाय अथवा बकरीके दूधमें कफनाशक पदार्थ मिलाकर पीनेसे इसकी प्रकृति परिवर्तित हो जाती है। गाय या बकरीके दूधके समक्ष भैंसका दूध अत्यधिक कफवर्धक होता है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उपचार नीचे है :

१. अन्य कफनाशक पदार्थोंका सेवन। हां, अनुपान रूपमें (औषधिके साथ या ऊपरसे खाई जानेवाली वस्तुके रूपमें) केवल गायका उष्ण दूध ही लें !

२. जहां रोगी हो, उस कक्षका तापमानका परिमाण ४५-५० 'डिग्री'तक रखें ! उसे अनवरत स्वेद (पसीना) आएगा और उसका कफ जलना आरम्भ हो जाएगा। यह 'कोरोना'के विकासके लिए विषम परिस्थितिका निर्माण करता है।

३. यदि रोगीमें इतनी शक्ति है कि वह दौड लगा सके तो वह आधा घण्टा सवेरे तथा आधा घण्टा सायंकालमें दौड लगाए, चाहे कितना ही धीरे-धीरे क्यों न दौडा जाए; परन्तु निरन्तर आधा घण्टा दौडते रहें ! यहां सिद्धान्त यह है कि जब शरीरमें श्रम होता है तो सबसे पहले कफ जलता है। ऐसा करनेसे उसका कफ जलेगा। हां, खानपानमें यह अवश्य ही ध्यानमें रखना है कि रोगी कोई भी कफवर्धक पदार्थ न लें ! जौकी रोटी खाएं और घी या तोरी या मूंगकी दाल अल्पमात्रामें खाएं !

४. यदि पांच दिनोंतक रोगीको केवल उष्ण जल ही दिया जाए और कुछ भी न दिया जाए तो उसका कफ स्वतः समाप्त हो जाएगा। हां, रोगी कुछ दुर्बल अवश्य हो सकता है; परन्तु कफका साधन अवश्य बन्द हो जाएगा और उसका शरीर स्वयं इस कफको समाप्त कर देगा। स्मरण रहे कि साधारणतः मनुष्य ६० दिवसतक केवल जलपर निर्भर रहकर जीवित रह सकता है। भगत सिंहका साथी जतिनदास अनशनके (भूख हडतालके) ६४वें दिन ही मृत्युको प्राप्त हुआ था और वह केवल जल ही पी रहा था; इसलिए निश्चिन्त रहें !

५. जो मनुष्य एक घण्टा सवेरे, एक घण्टा सायं ध्यानाभ्यास (मेडिटेशन) करता है, उसका शरीर स्वतः इस रोगको समाप्त कर देता है; क्योंकि उसे ईश्वरीय उर्जा प्राप्त होने लगती है।

ये सभी प्रयोग आयुर्वेदके अनुसार हैं। - रामकुमार, हरिद्वार।

सावधानी : यह प्रयोग करते समय कुशल वैद्यसे परामर्श अवश्य लें; क्योंकि इसमें प्रकृतिमें उष्ण औषधियोंका प्रयोग है तो पित्त प्रकृतिवाले व्यक्तिको अथवा वह व्यक्ति, जिसे ये औषधियां अत्यन्त उष्ण करती हों तो उस स्थितिमें औषधियोंका उचित अनुपात व वैद्यके परामर्शसे लेना आवश्यक है, जिससे व्यक्ति बिना हानिके 'कोरोना'को पराजित कर सके !

इस पत्रिकाको पढनेके पश्चात इसे अपने स्वजनों व परिचित लोगोंको पढने हेतु दें, ऐसा करना धर्मप्रसाररूपी ईश्वरीय कार्यमें योगदान देने समान होगा।

बाल संस्कार

नमस्कार, जैसा कि आप जानते हैं कि 'बालसंस्कार'की श्रृंखला अन्तर्गत प्रत्येक मासिकमें बच्चोंके लिए एक प्रेरणादायक कथा एवं हिन्दू धर्मसे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर अगले माहकी पत्रिकामें दिए जाते हैं। आइए, इसी विषय अन्तर्गत अब हम इस अंककी कथाके विषयमें जानते हैं -

अर्जुनके अहङ्कारकी कथा :

एक बार अर्जुनको अहङ्कार हो गया कि वही भगवानके सबसे बडे भक्त हैं। उनके मनकी बात श्रीकृष्णने समझ ली। एक दिन वह अर्जुनको अपने साथ घुमाने ले गए।

रास्तेमें उनकी भेंट एक निर्धन ब्राह्मणसे हुई। उसका व्यवहार कुछ विचित्र था। वह सूखी घास खा रहा था और उसकी कमरसे तलवार लटक रही थी।

अर्जुनने उससे पूछा, "आप तो अहिंसाके पुजारी हैं। जीव हिंसाके भयसे सूखी घास खाकर अपना निर्वाह करते हैं; परन्तु फिर हिंसाका यह उपकरण तलवार क्यों आपके साथ है ?"

ब्राह्मणने उत्तर दिया, "मैं कुछ लोगोंको दण्डित करना चाहता हूं।"

"आपके शत्रु कौन हैं ?", अर्जुनने जिज्ञासा प्रकट की।

ब्राह्मणने कहा, "मैं चार लोगोंको खोज रहा हूं, जिससे उनसे अपना गणित चुकता कर सकूं।

सबसे पहले तो मुझे नारदकी खोज है। नारद मेरे प्रभुको विश्राम नहीं करने देते, सदा भजन-कीर्तनकर उन्हें जागृत रखते हैं, तदुपरान्त मैं द्रौपदीपर भी अत्यन्त क्रोधित हूं। उसने मेरे प्रभुको ठीक उसी समय पुकारा, जब वह भोजन करने बैठे थे। उन्हें तत्काल भोजन छोड पाण्डवोंको दुर्वासा ऋषिके श्रापसे बचाने जाना पडा; उसकी धृष्टता तो देखिए, उसने मेरे भगवानको जूठा भोजन खिलाया।"

"आपका तीसरा शत्रु कौन है?", अर्जुनने पूछा।

वह है हृदयहीन प्रह्लाद ! उस निर्दयीने मेरे प्रभुको गरम तेलके कडाहमें प्रविष्ट कराया, हाथीके पैरों तले कुचलवाया और अन्तमें खम्बेसे प्रकट होनेके लिए विवश किया।

और चौथा शत्रु है अर्जुन; उसकी दुष्टता देखिए, उसने मेरे भगवानको अपना सारथी बना डाला । उसे भगवानकी असुविधाका तनिक भी ध्यान नहीं रहा । कितना कष्ट हुआ होगा मेरे प्रभुको ।" यह कहते ही ब्राह्मणकी आंखोंमें अश्रु आ गए।

यह देख अर्जुनका अहङ्कार चूर-चूर हो गया। उसने श्रीकृष्णसे क्षमा मांगते हुए कहा, "मान गया प्रभु, इस संसारमें न जाने आपके कितने प्रकारके भक्त हैं। मैं तो कुछ भी नहीं हूं"; इसलिए बच्चों कभी भी किसी भी बातका अहङ्कार नहीं करना चाहिए। अर्जुनको अपनी भक्तिपर अहङ्कार था तो भगवानजीने उनसे श्रेष्ठ भक्तोंसे मिलवाया, जिससे उनका अहङ्कार नष्ट हुआ; उसी प्रकार आप यदि शिक्षामें अथवा किसी भी क्षेत्रमें श्रेष्ठ हैं तो उसका अहं कदापि न करें और न ही किसीका उपहास करें, वरन भगवानजीको कृतज्ञता व्यक्त करें कि उन्होंने वह कौशल्य आपको प्रदान किया है तो उस कौशल्यसे आप उनकी सेवा करें और सदैव उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें, इससे आपको भगवानजीका आशीर्वाद मिलेगा और आपके कौशल्यमें अधिक वृद्धि होगी !

गत माहके उत्तर हैं :-

१. शिवजीको एक पत्ता चढाते हैं, जो तीन पत्तोंका समूह होता है, उस पत्तेका नाम बताएं। - बिल्वपत्र

२. प्रभु श्रीरामका जन्मदिन जिस दिन मनाया जाता है, उस त्योहारका नाम बताएं! - राम नवमी

३. हनुमानजीके दो और नाम बताएं! - पवनपुत्र, मारुति

४. सुप्रसिद्ध कामाख्या मन्दिर किस राज्यमें है? - असम

५. विष्णु भगवानके वाहनका नाम बताएं! - गरुड

६. हिन्दू धर्म अनुसार मृत्युके देवता कौन हैं? - यमराज

७. हनुमान चालीसा किस सन्तने लिखी है? - गोस्वामी तुलसीदास

८. महाकवि कालीदासकी पत्नीका नाम क्या था? - देवी विद्योत्तमा

९. उत्तर भारतके किस सन्तको धर्मसम्राटके रूपमें जाना जाता है? - करपात्रीजी महाराज

१०. हिमालयके किसी एक सुप्रसिद्ध मन्दिरका नाम बताएं, जिनके पट (द्वार) छह माह हिमपातके कारण बन्द रहते हैं! - केदारनाथ

卐卐卐卐卐

इस माहकी प्रश्नोत्तरी

१. धनके देवता कौन हैं?

२. प्रसिद्ध सिद्धिविनायक मन्दिर कहां है और यह किस देवताका मन्दिर है?

३. बसन्त पञ्चमीवाले दिवस किस देवीकी पूजा की जाती है?

४. सम्भाजी महाराज किसके पुत्र थे?

५. सुप्रसिद्ध ग्रन्थ महाभारतके रचयिताका नाम बताएं।

६. आयुर्वेदके अनुसार त्रिदोष क्या हैं?

७. पाण्डवोंमें धनुर्धारी महाबली अर्जुनके धनुषका नाम बताएं।

८. सीता माताके पिता कौन थे?

९. कार्तिकेय किस देवताके पुत्र हैं?

१०. श्रावण माह किसी ऋतुमें आता है?

उपासनाके नूतन उपक्रममें सहभागी हों !

आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए गुरुपूर्णिमाके शुभ दिवससे वैदिक उपासना पीठद्वारा अग्निहोत्र यज्ञका उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है, जिसे आप अपने घर बैठे ही कर सकते हैं। यदि आप इसमें सहभागी होनेके इच्छुक हैं तो हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) के भ्रमणभाषके व्हाट्सऐप्प क्रमांकपर, 'मैं अग्निहोत्र उपक्रममें सहभागी होने हेतु इच्छित हूं, कृपया इससे सम्बन्धित व्हाट्सऐप्प गुटमें मुझे सम्मिलित करें', यह सन्देश भेजें!

ऐसा करनेपर आपको अग्निहोत्र यज्ञ करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन दिया जाएगा। यह एक अत्यन्त सरल विधि है एवं इसे करनेके अनेक लाभ हैं, वे आपको उस गुटमें बताए जाएंगे।

क्या आप जानते हैं ?

१. कानपुरका वास्तविक नाम - कान्हापुर

२. देहलीका वास्तविक नाम - इन्द्रप्रस्थ

३. हैदराबादका वास्तविक नाम - भाग्यनगर

४. इलाहाबादका वास्तविक नाम - प्रयाग

५. औरंगाबादका वास्तविक नाम - सम्भाजी नगर

६. भोपालका वास्तविक नाम - भोजपाल

७. लखनऊका वास्तविक नाम - लक्ष्मणपुरी

८. फैजाबादका वास्तविक नाम - अवध

उपासनाके निर्माणाधीन आश्रम हेतु अर्पण कर इस पुनीत कार्यमें सहभागी हों !

बैंक स्थानान्तरण अथवा अर्पण राशि जमा नीचे दिए गए विवरणके अनुसार की जा सकती है :

खाता नाम	:	वैदिक उपासना पीठ
बैंक	:	पंजाब नैशनल बैंक
खाता क्रमांक	:	6832002100001023
खातेकी प्रकृति	:	चालू
आईएफएससी कोड	:	PUNB0683200
शाखा पता	:	मानपुर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

धनादेश (चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'वैदिक उपासना पीठ'के खातेमें मानपुर, इन्दौरमें देय

 # दान, आयकर अधिनियम, 1961 की धारा '80 जी'के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

दानराशि जमा करानेके पश्चात प्राप्तिपत्र (रसीद) प्राप्त करने हेतु -
कृपया हमारे संगणकीय पते (ई-मेल आईडी) vedicupasana@gmail.com पर अथवा
सम्पर्क क्रमांक : + 91-9717492523 / +91-9999670915 पर WhatsApp सन्देश भेजकर सूचित करें !

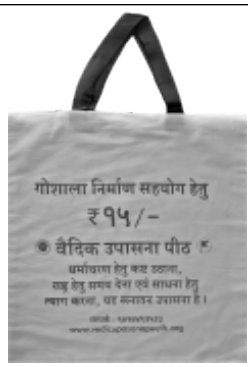

वैदिक उपासना पीठद्वारा गौशालाके निर्माणमें सहयोग हेतु

वैदिक उपासना पीठद्वारा गौशालाके निर्माणमें सहयोग हेतु कपडेकी थैलियोंका निर्माण किया जा रहा है। इसे क्रय करनेसे आपको ऐसी थैली मिलती है, जिसे आप अपने उपयोगमें बार-बार लाकर, पर्यावरण रक्षणमें न केवल योगदान दे सकते हैं; अपितु गौपालनमें हमारा सहयोग भी कर सकते हैं; क्योंकि इससे प्राप्त राशि इन्दौरके मानपुर क्षेत्रमें निर्माणाधीन गौशालामें आपकी ओरसे दिए गए दानके रूप में चली जाती है। आप कहीं भी हैं,यदि आपको ऐसी थैलियां चाहिए तो आप हमसे सम्पर्क कर सकते हैं ।

Sumangla Software & Services

Mahendra Kumar Sharma

9810018125
9310018125
011-45873545,

Sumangla Software & Services

Committed For Better Services

Business Application Software's

Tally Sales, Support and AMC etc.
Tally Customization as per your requirement
Payroll Software the Complete Solution for your payroll
E-tds Software
Income Tax
Balance Sheet
Service Tax
Project Report/CMA
Form Manager
E-AIR

Other Activities
- **Consultation Services**
- **System Implementation**
- **Other Business Application Software Development**
- **Bridging of Third party software with Tally**

Tally
POWER OF SIMPLICITY
THOMSON REUTERS
Saral PayPack
The Complete Payroll Solution

110, Choudhary Complex, 9 Veer Savarkar Block, Madhuban Road, Shakarpur, Delhi-110092
info@sumanglasoftware.in, Sumanglasoftware@yahoo.com

बाबाकी गुरुभक्तिका प्रतीक है मोरटक्काका आश्रम

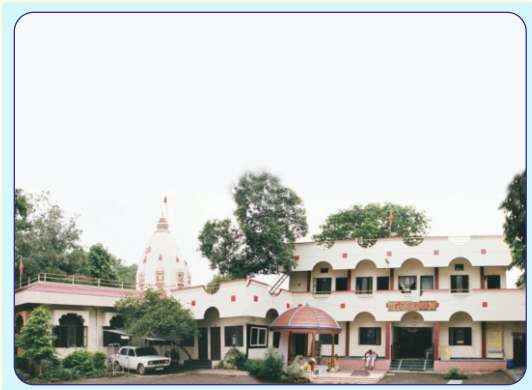

एक बार प. पू. अनंतानंद साईश बाबाको लेकर खेडीघाट स्थित शामसाई आश्रमसे बडवाह जा रहे थे, मार्गमें जहांपर आज 'श्री सद्गुरु सेवा सदन' आश्रम है, उस समय वहांपर रिक्त स्थान था। प. पू. अनंतानंद साईशने अपनी पादत्राण (चप्पल) वहां फेंक दी। बाबाने यह बात देखी एवं भविष्यमें इस स्थानपर अपने सद्गुरुकी पावन स्मृतिमें कुछ करनेका संकल्प लिया और उन्होंने कालान्तरमें वह भूखण्ड ६०० रुपयेमें क्रय कर लिया। भविष्यमें बाबाके उत्तराधिकारी रामानंद महाराजने (रामजी दादाने) बाबाकी इच्छा अनुसार एक सुन्दर गुरुमन्दिर, बाबाकी गादी, बैठक, अन्नपूर्णा कक्ष, ध्यान कक्ष, भक्तनिवास आदिका निर्माण किया। यह स्थान साधना हेतु बनाया गया है एवं बाबाको यह स्थान बहुत भाता था।

बाबाका समाधिस्थल अर्थात हम भक्तोंका तीर्थक्षेत्र

बाबाका महानिर्वाण दिनांक १७ नवम्बर १९९५ को इंदौरमें हुआ। उनकी इच्छानुसार उनका दाह संस्कार कांदली, जनपद पुणे स्थित उनके पैतृक स्थानपर दिनांक १८ नवम्बरको किया गया। ग्राम कांदलीमें बाबाकी २२ एकड भूमि एवं ६ एकड भूमि, पैतृक सम्पत्ति है। वहां ७०० वर्ष पुराना श्रीराम मन्दिर भी है। एक स्थानकी व्यवस्था हेतु बाबाने एक पारिवारिक न्यासकी (ट्रस्टकी) स्थापना, 'श्रीरामचन्द्र देव ट्रस्ट'के नामसे की। आगे चलकर इसका नामकरण न्यासके सदस्योंद्वारा श्रीरामचन्द्र देव ट्रस्ट एवं भक्तराज महाराज समाधि ट्रस्ट किया गया। बाबाके ज्येष्ठ पुत्र श्री. हेमन्त कसरेकर वर्तमान समयमें प्रमुख विश्वस्त हैं। प. पू. रामानंद महराजकी प्रेरणा तथा आशीर्वादसे इस समाधि मन्दिरका निर्माण हुआ।

भारतके रहस्यमयी मन्दिर

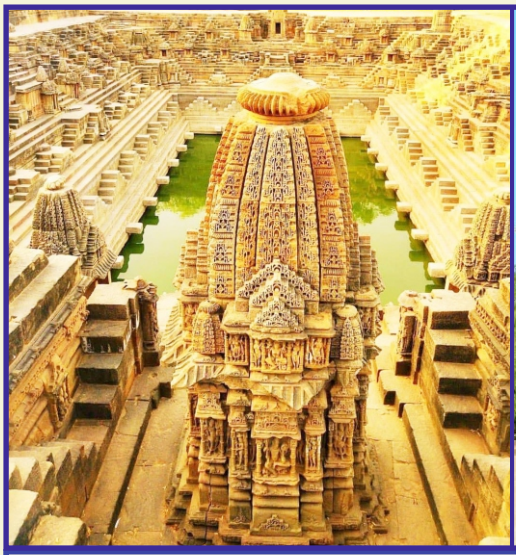

मोढेरा सूर्य मन्दिर, मेहसाणा, गुजरात

मन्दिर जो पृथ्वीकी गतिके आधारपर सूर्यके प्रकाशको करता है ग्रहण

जब आप गुजरातके मेहसाणा जनपदमें बने मोढेरा गांवके सूर्य मन्दिरको देखेंगे तो आप सोचेंगे कि वो कौन लोग होंगे, जिन्होंने इस मन्दिरकी संरचनाको इतने सटीक ढंगसे सांचेमें उतारा है ?, प्रतीत होता है कि स्वयं सूर्य भगवान यहां निवास करते होंगे। इस अद्भुत कलाके प्रतीकको जिहादी महमूद गजनीने नष्ट कर दिया था, तो आप सोचिए कि यदि इसे नष्ट न किया जाता तो आज इसकी सुन्दरता क्या होती और ये उस समय कितना सुन्दर रहा होगा ? यद्यपि यह मन्दिर आज खण्डहर है; परन्तु इसकी सुन्दरताका आज भी कोई विकल्प नहीं है। इसके अनेक रहस्य इतिहासके पृष्ठोंमें कहीं खो गए हैं। पुष्पावती नदीके तटपर खडा यह मन्दिर ऐसा मन्दिर है, जहां अब कोई पूजा नहीं की जाती और आपको जानकर आश्चर्य होगा कि उडीसाके कोणार्क मन्दिरसे भी पूर्व इस असाधारण कलाके प्रतीकको बनाया गया था। सूर्य मन्दिरको 'लॉकिंग सिस्टम'का उपयोग करके बनाया गया, जो एक भूकम्प प्रतिरोधी तकनीक मानी जाती है। जैसे कि यदि भूकम्प आया तो मन्दिर हिल सकता है; परन्तु टूट नहीं सकता। यह भारतके निकटसे निकलनेवाली कर्क रेखाके ऊपर बनाया गया है, ऐसा इसलिए किया गया होगा कि दिनके भिन्न-भिन्न समयपर सूर्य इस मन्दिरमें बने कुण्डके भिन्न-भिन्न पक्ष हमें दिखाता है, जिसके कारण इसका नाम 'सूर्य कुण्ड' रखा गया या इसके पीछे यह भी कारण हो सकता है कि जब मन्दिरके भगवानकी प्रतिमापर सूर्यका प्रकाश पडता था तो वो चमकती थी। इसके गर्भगृहको इस प्रकार बनाया गया था कि सौर विषुवके (जब दिन-रातकी अवधि समान होती है) दिनोंमें उदय होते सूर्यकी प्रथम किरण मन्दिरके गर्भगृहमें रखे सूर्य भगवानकी प्रतिमापर पडकर उसे प्रकाशमान करती थी और गर्मियोंके दिनमें (२१ जून) सूर्य मन्दिरके सीधे ऊपर चमकता था, जिससे मन्दिरकी छाया नहीं बनती थी। मन्दिरकी वास्तुकला कितनी जटिल है ?, इसका ज्ञान इसी बातसे हो जाता है कि पृथ्वीकी गतिके आधारपर सूर्यका प्रकाश जिस प्रकारसे २१ मार्च और २१ सितम्बरवाले दिन गर्भगृहमें रखी प्रतिमापर पडता है। क्या यह अभियन्त्रिकीका अर्थात 'इञ्जीनियरिङ्ग'का अद्भुत प्रतीक नहीं है ?

स्वामी, वैदिक उपासना पीठके लिए प्रकाशक/मुद्रक नितिन जोशी द्वारा श्रीरंग आफसेट, १२३ देवी अहिल्या मार्ग, श्रम शिविर, जेलरोड, इन्दौर, म.प्र. से मुद्रित एवं १५०-बी, वैशाली नगर, इन्दौर से प्रकाशित, सम्पादक - (पू.) तनुजा ठाकुर

RNI No.- MPHIN/2019/77752